

ब्रजकी झाँकी

(यात्रा)



लेखक—

गोस्वामी लक्ष्मणाचार्य

शुद्ध तथा प्रकाशक
 धनदयामदास जाल्पा
 गीता प्रेस, गोरखपुर

स० १९९०	प्रथम संस्करण	३२५०
स० १९९१	द्वितीय संस्करण	३०००
स० १९९३	तृतीय संस्करण	३०००
स० १९९४	चतुर्थ संस्करण	४०००
स० १९९६	पंचम संस्करण	३०००
स० १९९७	षष्ठ संस्करण	३०००
स० १९९८	सप्तम संस्करण	५०००
स० २०००	अष्टम संस्करण	३०००
स० २०००	नवम संस्करण	५०००
		<hr/>
		टोटल ३२२५०

पता—

गीताप्रेस, गोरखपुर

मूल्य १) चार आना

विषय-सूची

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
प्रजमहिमा	११	कुमुदवन	३८
प्रज नामना कारण और स्थान		गिरिधरपुर	३८
विस्तार	१६	शतनुकण्ड (सतोडागाँव)	३८
वन उपवन	१६	दतियागाँव	३८
सरिता	१७	गधवेश्वर (गणेशरागाँव)	३८
सरोवर	१७	रोचरीगाँव	३८
पर्वत	१७	बहुलावन (वाठीगाँव)	३९
प्रज-यात्रा	१८	तोपगाँव	३९
मथुरा	२०	विहारवन	३९
मथुराकी ऐतिहासिकता	२०	जापिन (यक्षहन्गाँव)	३९
स्थान-परिचय	२१	मुखराह (मोक्षराजतीर्थ)	३९
घाट	३०	रारगाँव	३९
परिक्रमा	३१	जसोदीगाँव	३९
प्रकीर्णक	३२	बसोदीगाँव	४०
शिक्षा विभाग	३३	राधाकुण्ड	४०
धर्मशालाएँ	३४	गोवधन	४१
दरवाजे	३४	जमनाउतोगाँव	४५
अन्यान्य स्थान	३५	अङ्ग अरिष्टगाँव अथवा	
व्यापार	३६	अरिग्रहगाँव	४५
विद्वान्	३६	माधुरीकुण्ड	४५
यात्रावणन	३७	भवनपुरा	४६
	३७	दुबेलेका गाँव दुबेलाकुण्ड,	
	३७	पाराधौली(परमरासस्थली)	४६

ग्राम	पृष्ठांक	ग्राम	पृष्ठांक
मोड़कुण्ड पैठोगाँव	४६	गङ्गेत	६१
बछगाँव (बत्तमाम)	४७	रीठौरा (रिखेरा) गाँव	६१
आयौर	४७	नन्दगाँव	६१
भंसरीकुण्ड, गार्धनकुण्ड,		धीरसौगाँव (शीप्र	६१
गोविन्दकुण्ड	४७	परभ)	६१
दयामदाक	४८	विद्यापीगाँव	६१
जतीपुरा	४९	करहला	६१
ददकुण्ड (ददनकुण्ड)	५०	वेन्दोगर	६१
गाँठोनीगाँव	५०	राधौलीग्राम	६१
डीग (लठावन)	५०	कामरगाँव	६४
नीधगाँव	५१	दधिगाँव (दहगाँव)	६४
पाडरगाँव	५१	शयशायी	६५
परमदरे (परममन्दिर)	५१	कोसी	६५
गाँव	५१	छाता	६५
बहज (बग्गी) गाँव	५१	शेरगढ	६६
आदिबग्गी	५१	बल्लमोचन, कात्यायनी	६७
इन्दरोलीगाँव	५२	घाट और चीरघाट	६७
कामवन	५२	नन्दघाट	६७
कनारोगाँव	५४	बसईगाँव	६७
चित्र विचित्र शिला	५५	वत्सवन	६७
लूँचोगाँव	५५	राधौलीगाँव	६८
डभारोगाँव	५५	नरी-सेमरीगाँव	६८
बरसाना	५६	चौधुहागाँव	६८
विहारवन, गहवर (गह्वर)	५६	आजही	६९
वन	५६	जैत	६९
प्रेमसरोवर	५८	छटीकरा	६९

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
गरुड़ गोविन्द	७०	देवनगर	९२
अमूरघाट, अमूरगाँव	७०	ब्रह्माण्डघाट	९२
मतरोह	७०	कोलेघाट, कोलेगाँव	९३
शृन्दावन (भीषन)	७१	कर्गाँसल	९३
शृन्दावनके याद	८५	महावन	९३
सुरीर (सुरभीरवन)	८५	गोकुल	९४
मुझाटवी	८५	रावल	९५
भद्रवन	८६	कुछ अथ आवश्यक बातें	९६
माण्डीरवन	८६	प्रजभूमिमें मसजिदें	९६
माँटगाँव	८६	प्रजभूमिमें गोवध	९८
बेलघा	८६	मयुरा शृन्दावाके बीचमें	
रेलनवन	८७	शिकार रेलनेकी मनाही	१०१
मानसरोवर	८७	स्टेशनकी आशा	१०१
राया	८७	आवश्यक सूचनाएँ	१०१
लोहवन	८७	मयुरासे कुछ तीर्थस्थानोंकी	
बृहदवन	८७	दूरी तथा सवारी	१०३
बान-दी-बन्दीदेवी	८८	लेखकपरिचय	१०४
बल्देवगाँव	८८		



चित्र-सूची

	पृष्ठ		पृष्ठ
१-श्रीगन्दनदन (बहुराण)	११	१८-संगमरमर-गुण (डाग)	४७
मथुरा		१९-भोजनापाणी	४७
२-श्रीभूतेश्वरनाथ	२२	२०-श्रीलाडलीजी (राधाजी)	
३-श्रीगिणलेश्वर	२२	या मन्दिर (बरसाना)	५६
४-श्रीरघुधरनाथ महादेव	२३	२१-राधागोगलजीका मन्दिर	
५-श्रीगाङ्गेश्वरनाथ महादेव	२३	(प्रेमसरोवर)	५७
६-विभामघाट	२६	२२-जयपुर-नरेशका मन्दिर	
७-कृष्णमहापाट	२६	(बरसाना)	७७
८-श्रीद्वारकाधीशजीका मन्दिर	२७	२३-प्रेमसरोवर	६०
९-श्रीराधेश्यामजीकी		२४-नन्दगोवका एक दृश्य	६१
शॉकी, स्वामीघाट	२७	२५-श्यामकुण्ड	७०
१०-मथुराके समहालयकी		२६-अधूरघाट	७०
एक सुन्दर मूर्ति	३२	घृन्दावन	
११-मथुराके समहालयकी		२७-घृन्दावनका एक दृश्य	७०
कुछ सुन्दर मूर्तियाँ	३३	२८-कालीदह	७०
—❧—			
१२-श्रीराधाकुण्ड	४०	२९-युगलघाट	७०
१३-श्रीकृष्णकुण्ड	४०	३०-मदनमोहनजीका मन्दिर	७१
१४-कुसुम-सरोवर	४१	३१-श्रीयुगलकिशोरीजीका	
१५-मानसी गङ्गा, रास		मन्दिर	७१
महल (गोवर्धन)	४१	३२-श्रीश्रीराधारलमजीकी	
१६-चन्द्रसरोवर	४६	शॉकी	७२
१७-गोपालभवन (डाग)	४६	३३-श्रीबॉनेविहारीजीका	
		मन्दिर	७२

	पृष्ठ		पृष्ठ
३४-सेवाकुञ्ज	७३	४७-यमुना पुलिन	८२
३५-शाहनिहारीलालजीका मन्दिर	७४	४८-श्रीगोविन्ददेवजीका मन्दिर	८३
३६-निधिवन	७४	४९-श्रीगोविन्ददेवजीकी झाँकी (जयपुर)	८३
३७-श्रीराधारमणजीका मन्दिर	७५	५०-शाहजहाँपुरवाली रानीका मन्दिर	८६
३८-श्रीराधारमणजीकी झाँकी	७५	५१-वेशीघाट	८६
३९-रासमण्डल	७६	५२-चीरघाट	८७
४०-श्रीगोपीनाथजीकी झाँकी	७६	५३-मानसरोवर	८७
४१-गोकुलानन्दमन्दिर, श्रीराधाविनोदजी	७७		
४२-यशीवट	७७	५४-श्रीवलदेवजीकी झाँकी	८८
४३-श्रीगोपेश्वर महादेव	७८	५५-क्षीरसागर	८९
४४-लालाबानूका मन्दिर	७८		
४५-श्रीरगनाथजीका मन्दिर	७९		
४६-शान गुदड़ी, यमुना-चढाव	८२	५६-ठकुरानीघाट (गोकुल)	८९



उपोद्घात

राधानाथसमारम्भा श्रीविष्णुस्वामिमध्यमाम् ।
असदाचार्यपर्यन्ता वन्दे गुरुपरम्पराम् ॥

यह ब्रजमण्डल गोत्रोक भूमि है। गो, गोप, गोपीगण परिवेष्टित, अखण्डब्रह्माण्डनायक, फर्दपर्वकोटिलखण्ड, मुरलीगादननिरत कमउद्दल्लोचन श्यामसुन्दर श्रीशृष्णकी जो और जैसी लीलाएँ गोत्रोकग्राममें होती हैं वे और जैसी ही लीलाएँ इस ब्रजमण्डलमें होती हैं, एसा ब्रह्मनैरर्त्तपुराण, गर्गमहिता आदि ग्रन्थोंमें उल्लेख है। इसीसे किसी महानुभावने मथुराकी महत्ताको देखकर कहा था कि—

मथुरेति त्रिवर्णीय त्रयीतोऽपि गरीयसी ।
मा घावति पर ब्रह्म ब्रह्म तामनुधानति ॥

मथुरा ये तीन वर्ण वेदत्रयीसे भी अधिक हैं, क्योंकि वेदत्रयी तो ब्रह्मके पीछे दोड़ती हैं और ब्रह्म मथुराके पीछे दौड़ता है। एक भक्तशिरोमणि महारत्ना वृन्दावनकी अलौकिकताको निरखकर यह उठे कि—

वेदद्रुमे मृगय मा वृन्दानिपिने द्रुमे द्रुमे पश्य ।
यद्ब्रजवनिता भूत्वा श्रुतिभिरिहैवावलोकित ब्रह्म ॥

‘वेदरूपी वृक्षमें ब्रह्मको मन ढँढ़, किन्तु वृन्दावनमें पैड़-पेड़में देख ले, क्योंकि श्रुतियोंने ब्रजगाला बनकर यहाँ ही तो ब्रह्मको देखा था ।’ महावनमें एक बार दोनों भाई राम-श्याम घुटुअन चलने-चलते नद महलके द्वारपर पहुँच गये, दाऊजी तो बड़े थे सो देहलीको लौंघकर नीचे उतर गये, किन्तु ठोटे सरकार उनकी देखादेखी चोखट पकड़कर नीचे उतरने लगे, पर ठोटे होनेके कारण धरतीतरुँ पर न पहुँच पाये, अब ऊपर भी नहीं चढ़ सकने, इससे वहाँ लटकने लगे और रोने लगे । इतनेमें ही कोई महात्मा उधर आ निकले और इस नजारेको देखकर गद्-गद होकर कहने लगे—

श्रुतिमपरे स्मृतिमपरे भारतमपरे भजन्तु भगभीताः ।

अहमिह नन्द वन्दे यस्यालिन्दे पर ब्रह्म ॥

(श्रीघुपत्युपाभ्यायस्य)

‘संसारसे डरे हुए कोई चाहे श्रुतिको, चाहे कोई स्मृतिको और चाहे कोई भारतको भजा करे, पर हम तो इस नन्दबाबाको प्रणाम करते हैं, जिसकी चोखटपर परब्रह्म लटक रहा है ।’ जिस ब्रजमें यह सुख है, यह भाव है, यह प्रेम है उसकी महिमाका क्या वर्णन हो सकता है ? इसीलिये हजारों वर्ष व्यतीत हो जानेपर भी श्रीकृष्णकी इस लीलास्थलीके दर्शन करनेको, इसकी परम पावन रजमें लेटनेको, कहीं लुक छिप करके भी उस मोरमुकुटवालेकी झाँकीकी झलक दिखायी दे जाय इस आशाके पूर्ण करनेको दूर-दूर ~~से~~ लखों यात्री ब्रजमें आते रहते हैं और यहाँ आकर ~~रहते~~ रहते हैं । कोई कोई घर बैठे ही दूसरोंसे

व्रजदर्शनीकी छात्रमाफी तृप्त कर देते हैं । परन्तु इनके बड़े व्रजके ममात्त धीत्रम्यगोंके दर्शनकी सुविधा समस्त यात्रियोंको नहीं हो सकती । इसी त्रुटिके दूर करनके इस श्रेष्ठ से निबन्धकी शिफारस व्याणपत्रमें प्रकाश करके लिये भेजा था और यह व्याणके धीदृष्णाद्धमें प्रकाशित हुआ था । उसीने पुनः उत्कृष्ट परिश्रम एवं परिश्रित करके यह पुस्तकके आकारमें प्रकाश करके व्रजमर्तोंकी रोगमें समर्पित किया है । व्रजके यात्री इसके अनुसार व्रजकी यात्रा अच्छी तरह कर सकेंगे । घर बैठे राजन भी इसके द्वारा व्रज यात्राका सुगम ध्यानमें प्राप्त कर सकेंगे, एभी पूर्ण आशा है । जो राजा कृपा कर इसकी मनुष्य-स्वभावमुत्तम त्रुटियोंको सूचित करेंगे, उनकी कृपाका धन्यवाद किया जायगा और आगामी संस्करणमें वे त्रुटियों सुगर दी जायेंगी । [इस पुस्तकका समस्त मुद्रणाद्यभित्तर गीताप्रम, गोरखपुरके अख्यक्ष महोदयको है ।] अतमें श्रीनजराजसे प्रार्थना है कि यह 'यात्र्य-कुसुमाञ्जलि' श्रीमहाराजके चरणोंमें समर्पित है, इससे लोगोंके चित्तमें भक्तिका उदय हो और उनका कल्याण हो ।

इसके चीथे संस्करणमें पुनः सशोधन परिवर्तन कर दिया गया है ।

धीविष्णुस्वामिसम्प्रदाय शोन्वामी लक्ष्मणाचार्य—मधुरावासी



ब्रजकी भाँकी



श्रीनन्दन दन

श्रीविष्णुस्वामिने नम

ब्रजकी झाँकी

ब्रजाधिराजपादपद्मयुग्मशुभ्रमन्दिरे ।

मनोरमे मनो रमेत मे नखालिचन्दिरे ॥

भुवन विदित इहि जदपि चारु भारत-भुरि पावन ।

पै रसपूर्ण कमण्डल ब्रजमण्डल मन भावन ॥

—स्व० कवि सरनाथपण

ब्रजमहिमा

भागान् श्रीगृष्णा धन्य हैं, ठाकी लीलाएँ धाय हैं और इसी प्रकार यह भूमि भी धाय है, जहाँ वे विगुणपति मानस्वरूपमें अवतरित हुए और परम पवित्र अतुल्य अद्वैतिक लीलाएँ कीं, जिसकी एक-एक झोँक का अनुकरण भी भक्तों के हृदयोंको अत्यधिक आनन्द देती है। श्रीकृष्णकी अरागति हुए आज पाँच



श्रीनिन्दनन्दन

श्रीविष्णुम्यामिने नम

ब्रजकी झाँकी

ब्रजाधिराजपाटपन्नयुग्मशुभ्रमन्दिरे ।

मनोरमे मनो रमेत मे नखालिचन्दिरे ॥

भुवन विदित इहि जदपि चारु भारत भुवि पावन ।

पै रसपूर्ण कमण्डल ब्रजमण्डल मन-भावन ॥

—स्व० कवि सत्यनारायण

ब्रजमहिमा

भगवान् श्रीकृष्ण धर्य हैं, उनकी लीलाएँ धर्य हैं और इसी प्रकार यह भूमि भी धर्य है, जहाँ वे त्रिमुरनपति मानरूपमें अवतरित हुए और परम पति अनुपम अलौकिक लीलाएँ की, जिनकी एक-एक झाँकीका अनुकरण भी भावुक हृदयोंको अलौकिक आनन्द देता है। श्रीकृष्णको अवतरित हुए आज पाँच सहस्र

घरसे ऊपर हुए । उनके कीर्ति-गानके साथ-साथ उस गूणवन्दी भी महिमाका सर्वदा भगान किया जाता है । वहाँकी रजको मस्तकपर धारण करनेके श्रिये अजरु शतश लोग तरसते हैं । मदे बदे लम्बीके छाल अपन समस्त सुख-सुभाग्यको छाल मा यहाँ आ बसे और व्रजके दूक मोंग-मोंगकर उदर पोषण करनेमें ही अरने आपको धन्य समझा । यही नहीं, अनेक मक हृदय तो यहाँके दुकाहोंके लिये तरसा करते हैं, भगवान्से इसके लिये प्रार्थना करते हैं । ओइछेवे बाग गिइगिदाकर कहने हैं—

ऐमो कब करिहो मन मेरो ।

कर फरना हरवा गुजनको, कुजन मोंहि बसेरो ।

व्रजवासिनके दूरु जूँठ अरु घर घर छाल महरो ॥

भूख लगे तब मोंगि खाइहाँ, गिनौ न साँझ-सबरो ।

ऐमी आस 'ब्याम' की पूजाँ मेरे गौर न खेरो ॥

यह क्या बात है ? इस भूमिमें एसा कीन सा आकषण है जो अपनी ओर इच्छाके निरुद्ध भी आकर्षित कर लेता है ? भगवान् श्रीकृष्णने यहाँ जन्म धारण किया था और नाना प्रकारकी अलोकिक लीटारें की थी, क्या इसीलिये मक हृदय इससे इतना प्रम करते हैं ? हाँ, अन्वय ही यह बात है, पर केवल यही बात नहीं है, इसके साथ-साथ सोनेमें सुगन्ध यह और भी है कि इस भूमिको भगवान् श्रीकृष्ण गोलोकसे यहाँ लये थे । जैसे व्रजमें देवा-देवता, ऋषि मुनि, श्रुतियों आदिने आकर गोप गोपिकाओंका जन्म ग्रहण किया था, उसी प्रकार व्रज भूमि भी श्रीगोलोक धामसे

आयी थी, इस कारण इसकी महिमा विशेष है। पुराणोंके अनुसार यह भूमि सृष्टि और प्रलयकी व्यवस्थासे बाहर है। ऋग्वेदके विष्णुसूक्तमें एक ऋचा व्रजके सम्बन्धमें मिलती है, जो इस प्रकार है—

ता वा वास्तून्युत्ससि गमध्यै

यत्र गावो भूरिशृङ्गा अयास. ।

अत्राह तदुरुगायस्य वृष्णः

परम पदमवभाति भूरि इति ॥

ता तानि वा युज्यो रामकृष्णयोर्गास्तूनि रम्यम्यानानि गमध्यै गन्तुम् उत्ससि उष्मः कामयामहे न तु तत्र गन्तु प्रभनामः । यत्र (वृन्दावनेषु) वास्तुषु भूरिशृङ्गा गावः अयामः सञ्चरन्ति अत्र भूलोके अह निश्चित तद् गोलोकाख्य परम पद भूरि अत्यन्त मुख्यम् उरुभिर्बहुभिर्गीयते स्तूयत इत्युरुगायस्तस्य वृष्णः वृष्णोर्यादवस्य पदमवभाति प्रकाशत इति ।

अर्थात् इन्द्र स्तुति करते हैं कि “हे भगवन् श्रीवठराम और श्रीकृष्ण ! आपके वे अति रमणीक स्थान हैं । उनमें हम जानेकी इच्छा करते हैं, पर जा नहीं सकते । कारण—

अहो मधुपुरी धन्या वैकुण्ठाच्च गरीयसी ।

विना कृष्णप्रसादेन क्षणमेक न तिष्ठति ॥

‘यह मधुपुरी धन्य और वैकुण्ठसे भी श्रेष्ठ है, क्योंकि वैकुण्ठमें तो मनुष्य अपने पुरुकार्थसे पहुँच सकता है, पर यहाँ श्रीकृष्णकी कृपाके बिना कोई एक क्षण भी नहीं ठहर सकता ।’ जहाँ (व्रजमें) वड़े

सीगोंवाली गाये चरनी हैं । यदुकुम्में अन्नार लेने-गळे, उरगय (बहुत प्रकारसे गाये जानगले) भगयन् वृष्णिना गोत्रोक नामक यह परम पद (व्रज) निधित ही भूत्रेकमें प्रकाशित हो रहा है ।" तत्र फिर बनलाये, व्रजभूमिकी बराबरी कौन स्थान कर सकला है ? भारतवर्षमें अनेक तीर्थस्थान हैं, सका माहात्म्य है, भगयन्के और-और भी जन्मस्थान हैं, पर यहाँकी बात ही कुछ निराली है । आनन्द ही अनोखा है ! यहाँके नगर-ग्राम, मठ-मन्दिर, धन-उपान, लता कुञ्ज आदिकी अनुपम शोभा भिन्न भिन्न ऋतुओंमें भिन्न भिन्न प्रकारसे देखनेको मिलती है । अपनी जन्मभूमिसे मभीको प्रेम होता है, फिर वह चाहे खुल रँडहर हो अथवा सुरम्य स्थान, वह जन्मस्थान है, यह रिचार ही उसके प्रति प्रेम होनेके लिये पपात है । इसीलिये भगयन्का भी इससे प्रेम होना स्वाभाविक है । इससे धीमागवन्में लिखा है 'मथुरा भगयन् यत्र नित्य सन्निहितो हरि ।' उस पुण्यभूमिकी रही-सही नैसर्गिक छटाके दर्शनके लिये—उस छटाके लिये निमना एक शारी उस पवित्र युगका, उस जगद्गुरुका, उसकी लौकिकरूपमें की गयी अलौकिक लीलाओंका अद्भुत प्रकारसे स्मरण करती, अनुभवका आनन्द देती और मन्त्रि मन मन्दिरको सर्वथा स्वच्छ करनेमें सहायता प्रदान करती है—भावुक भक्त तरमा करते हैं, इमें आधर्म ही क्या है ? नैसर्गिक शोभा भी न होती, प्राचीन लीलाचिह्न भी न मिलते होते, तो भी केवल साक्षात् परमधन यहाँ विप्रह होनेके नाते ही यह स्थान आज हमारे लिये तीर्थ था, यह भूमि हमारे लिये तीर्थ थी, जहाँकी पानन रजको व्रज उद्धवने अपने मस्तकपर

धारण किया था, वे ब्रजवासी भी दर्शनीय थे जिनके पूर्वजोंके भाग्यकी सराहना करते-करते मत्स्यसूत्रके शब्दोंमें बड़े-बड़े देवता आकर उनकी जूँठन खाते थे, क्योंकि उनके बीचमें भगवान् अवतरित हुए थे ।

व्रजवासी-पट्टर कौड नहीं ।
 ब्रह्म, सनक, सिप, ध्यान न पावत,
 इनकी जूँठन लै लै खाहीं ॥
 हलधर कद्यो, छाक जैवत सँग,
 मीठौ लगत सराहत जाहीं ।
 'सूरदाम' प्रभु जो त्रिखम्बर,
 सो ग्वालनके कौर अघाहीं ॥

तत्र फिर यहाँ तो अनन्त दर्शनीय स्थान हैं, अनन्त सुन्दर मठ मन्दिर, वन-उपवन, सर-सरोवर हैं, जो अपनी शोभाशेषके लिये दर्शनीय हैं और पावनताके लिये भी दर्शनीय हैं । उनके साथ अपना अपना इतिहास है । यद्यपि मुसलमानोंके आक्रमण पर-आक्रमण होनेसे व्रजकी सम्पदा नष्टप्राय हो गयी, कई प्रसिद्ध स्थानोंके चिह्नतक मिट गये, मन्दिरोंके स्थानपर मसजिदें खड़ी हो गयीं, तथापि धर्मप्राणजनोंकी चेष्टासे कुछ स्थानोंकी रक्षा तथा जीर्णोद्धार होनेसे यहाँकी जो भी कुछ बची-खुची शोभा आज है, वह भी अलौकिक ही है ।

व्रज-नामका कारण और स्थान-विस्तार

जिस स्थानमें पशु अधिक हों उसे व्रज कहते हैं। अथवा—
 'व्रजति अस्मिन् जना श्रीकृष्णप्राप्यर्षमिति व्रज' अर्थात् इस
 स्थानमें श्रीकृष्णभगवान्से मिलनेके लिये जीव जाते हैं, इसलिये यह
 व्रज है। यह व्रजभूमि मथुरा और वृन्दावनके आस पास चौरासी
 कोसमें फैली हुई मानी जाना है। गाराहपुराण (म० म० १७
 ख०) में इसका विस्तार अस्ती कोम माना गया है। जैसे कि—

त्रिंशत्तियौपनानां च माथुर मम मण्डलम् ।

यत्र तत्र नर स्नात्वा मुच्यते सर्वपातकैः ॥३॥

अर्थात् मेरा मथुरा मण्डल बीस योजन (अस्ती कोस) है,
 जिनके यत्र-तत्र स्थित तीर्थोंमें स्नान करनेसे मनुष्य सब पातकोंसे
 मुक्त हो जाता है। मथुराके चार कोसोंको मिलानेसे चौरासा कोस
 होने हैं। पैड पैडपर अश्वमेधका फल निश्चय प्राप्त होता है।

यत्र-उपवन

यहाँ बारह महावन और अनेक + 1 11 हैं—

महावन—१ मधु

५ कामवन, ६ मन्दिर

वन, १० बेलवन, ११

* पदे पदेऽधमे

† शुन्दावन तीन

पास, ३ मथुरासे तीन

आगे आवेगा।

गिनीमें आता है।

उपवन—१ गोकुल, २ गोवर्धन, ३ बरसाना, ४ नन्दगौर,
५ सकेत, ६ परममन्द, ७ अडौंग, ८ शेषशायी, ९ माट, १०
अञ्जगाम, ११ खेळवन १२ श्रीकुण्ड, १३ गन्धर्ववन, १४ परसौली,
१५ बिलट्ट, १६ वच्छवन, १७ आदिवद्री, १८ करहला, १९
आजनोखर, २० पिसायो, २१ कोकिलवन, २२ दधियन, २३
कोटवन, २४ रावल, २५ सुरभीर (सुरीर), २६ मुद्गाटनी
आदि अनेक उपवन हैं।

सरिता

व्रजमण्डलमें पहले कई सरिताएँ थीं, पर अब यमुना, कृष्ण
गङ्गा, मानसीगङ्गा और चरणगङ्गा—ये चार ही नदियाँ प्रकट हैं।
सरस्वती प्रकट नहीं हैं। मथुरामें जहाँ पहले सरस्वती बहती थीं
वहाँ अब सरस्वती-नाला नामसे स्थान प्रसिद्ध है और जहाँ सरस्वती
यमुनाजीमें मिलती थीं, वहाँ सरस्वती-सङ्गम तीर्थ अब भी प्रसिद्ध है।

सरोवर

सरोवर पाँच हैं—मानसरोवर, हसमरोवर, पानसरोवर,
चन्द्रसरोवर और प्रमसरोवर।

इसके सिवा मठ-मन्दिर, कुण्ड इत्यादि अगणित स्थान हैं।

पर्वत

पर्वत पाँच हैं—गोवर्धन, उरसानु, नन्दीशर, चरणपहाड़ी,
दूसरी चरणपहाड़ी।



व्रज-नामका कारण और स्थान-विस्तार

त्रिम स्थानमें पशु अधिक हों उसे व्रज कहते हैं । अथवा—
 'व्रजति अस्मिन् जना श्रीकृष्णप्राप्यर्यमिति व्रज' अर्थात् इस
 प्रातमें श्रीकृष्णभगवान्में मिटनेके लिये जीव जाते हैं, इसलिये यह
 व्रज है । यह व्रजभूमि मथुरा और वृन्दावनके आस पास चौरासी
 कोसमें फैली हुई मानी जाती है । वाराहपुराण (म० म० १७
 अ०) में इसका विस्तार अस्मी कोस माना गया है । जैसे कि—

पिशुनियोजनाना च मापुः मम मण्डलम् ।

यत्र तत्र नर स्नात्वा मुन्यते सर्वपातकैः ॥*

अर्थात् मेरा मथुरा मण्डल वीम योजन (अस्मी कोस) है,
 जिसके यत्र तत्र स्थित तीर्थमें स्नान करनेसे मनुष्य सब पातकोंसे
 मुक्त हो जाता है । मथुराके चार कोसोंको मिलानेसे चौरासी कोस
 होते हैं । पैँड पैँडपर अक्षयप्रकाश फल निश्चय प्राप्त होता है ।

घन उपघन

यहाँ बारह महावन और अनेक उपवन हैं जो इस प्रकार हैं—

महावन— १ मधुवन, २ तालवन, ३ कुमुदवन, ४ बहुलावन,
 ५ कामवन, ६ ग्वादिखन, ७ वृन्दावन, ८ भद्रवन, ९ भाण्डीर-
 वन, १० वेलवन, ११ लोहरवन, १२ मटावन ।

* पदे पद्मेऽश्वमेधाना फल प्राप्नोत्यवशयम् ।—ऐसा भी णठ है ।

† वृन्दावन तीन टं— १ कामवनके आस पास, २ गावधनके आस
 पास, ३ मथुरासे तीन कोसपर यत्नमानमें विद्यमान है । इसका विस्तार
 आगे आगे। वृन्दावनके साथ दा हैं । इससे यह वेलवनके पीछे भी
 गिनतीमें आता है ।

उपवन—१ गोकुल, २ गोवर्धन, ३ बरसाना, ४ नन्दगौर, ५ सकेत, ६ परममन्द, ७ अङ्गीग, ८ शेषशय्या, ० माट १० अञ्जगाम, ११ खेडवन, १२ श्रीकुण्ड, १३ गन्धर्ववन, १४ परसौली, १५ विठ्ठल, १६ वच्छवन, १७ आदिवद्री, १८ करहला, १९ आजनोखर, २० पिसायो, २१ कोकिलावन, २२ दधिवन, २३ कोठवन, २४ रावड, २५ सुरभीर (सुरीर), २६ मुझाटनी आदि अनेक उपवन हैं।

सरिता

व्रजमण्डलमें पहले कई सरिताएँ थीं, पर अब यमुना, कृष्ण-गङ्गा, मानसीगङ्गा और चरणगङ्गा—ये चार ही नदियाँ प्रकट हैं। सरस्वती प्रकट नहीं है। मथुरामें जहाँ पहले मरुस्वती बहती थी वहाँ अब सरस्वती नाला नामसे स्थान प्रसिद्ध है और जहाँ सरस्वती यमुनाजीमें मिलती थी, वहाँ सरस्वती-सङ्गम तीर्थ अब भी प्रसिद्ध है।

सरोवर

सरोवर पाँच हैं—मानसरोवर, हंससरोवर, पानसरोवर, चन्द्रसरोवर और प्रेमसरोवर।

उन्मके सिवा मठ-मन्दिर, कुण्ड इत्यादि अगणित स्थान हैं।

पर्वत

पर्वत पाँच हैं—गोवर्धन, उरसानु, नन्दीदार, चरणपहाड़ी, दूसरी चरणपहाड़ी।



मथुरा

मथुराकी ऐतिहासिकता

जहाँ आजकल मथुरा है वहाँ पहले न था, उस समय जहाँ मल्लपुरा या केशवदेवजीका मन्दिर है वहाँ बसती थी ! तबमें प्राचीन वस्तुएँ तान हाई । पर्यन, नदी और भूमि । प्राचीन वस्तुएँ या तो नष्ट हो गयीं या नष्ट कर दीं गयीं और उनके स्थान पर नयीं बन गयीं या पुरानीका जीर्णोद्धार हो गया । साराश यह है कि प्राचीनता नष्ट होकर नवीनताका मिराज मात्र निरलर आया । यही बात मथुराके सम्प्रधमें भी है । मथुरापर हूण, शक, बौद्ध, जैन, मुसलमान आदि सभका हमला और आधिपत्य होता रहा है जब अपने-अपने आधिपत्यमें सबोंने पुगनी शोभा नष्ट की और अपनी नयी वीर्ति स्थापित की, इस प्रकार प्राचीनता भङ्ग होती चली गयी । धर्मांध स्तेच्छोंन तीन बार इसमें कल्ले-आम भी फिफा, क्योंकि उनके यहाँ काफिरोंको मारना सभाव है और मथुरा-सदृश पुष्पनम तीर्थके काफिरोंका कल करना उहोंन बहिस्त पहुँचानेको काफी समझा था । उस कल्ले-आमको कल्लेके नामसे अब भी मथुरावासी याद कर लेंने हैं । यहाँपर राज्य भी बदल बदलकर कई हुए—पेशवा, सैरिया, जैपुर, होलकर, भरतपुर आदि । इस प्रकार मथुरा जैसे तीर्थरूपसे त्रिकक्षण है, वैसे यह अपना ऐतिहासिक महत्त्व भी निशेष रखती है । इसके टीलोंमें खैडहरोमें, भूमिमें, कुओंमें, यमुनामें बडी बडी महत्त्वकी ऐतिहासिक वस्तुएँ उपलब्ध हुई हैं, जो यहाँके 'प्राचीन-वस्तु-सम्राज्य' (म्यु

जियम) म रक्खी हुई ह । कुठ बाहर भी चली गया है । मन् १०१७ ई० में महमूद गजनवीने बीस दिननरु मथुरा ओर उसके आस-पासके वृन्दावन आदिको खूब ही नष्ट-भ्रष्ट किया । फिर मन् १५०० ई० में सुल्तान सिकन्दर लोदीने मथुराका सर्वनाश किया । सन् १६६० ई० में औरङ्गजेबने मथुरा आर व्रजका नाश किया । सन् १७५७ ई० में अहमदशाह अब्दालीन होलीके त्योंहारपर नाच रगमें डकड़े हुए मथुराके ओर उसके आसपासके ली, पुरुष, बालक, बुद्धोंका सहार किया । इस प्रकार 'मथुरा' सर्वदा दूसरोंके आक्रमण ही सहती चली आयी है ।

अस्तु, सन् १८०३ ई० में यहाँ अंग्रेजी राज्य स्थापित हुआ ।

स्थान-परिचय

हिन्दू धर्म-ग्रन्थोंमें मथुराकी बड़ी महिमा ह । अथर्ववेदकी गोपालतापिनीमें लिखा ह—

मथ्यते तु जगत्सर्वं ब्रह्मज्ञानेन येन वा ।

तत्सारभूत यद्यस्यां मथुरा सा निगद्यते ॥

अर्थात् जिस ब्रह्मज्ञान एव भक्तियोगसे सारा जगत् मया जाता ह यानी ज्ञानी और भक्तोंका ससार लय हो जाता ह, वह सारभूत ज्ञान और भक्ति जिसमें सदा निवमान रहते हैं, वह 'मथुरा' कहलती है ।

पद्मपुराणमें भगवान्का वचन ह—

अहो न जानन्ति नरा दुराशयाः

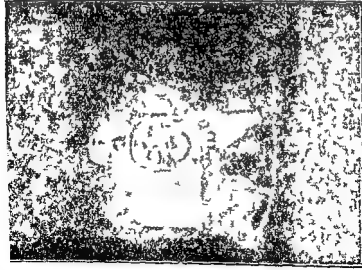
पुरीं मदीया परमा सनातनीम्

सुरेन्द्रनागेन्द्रमुनीन्द्रमधुता

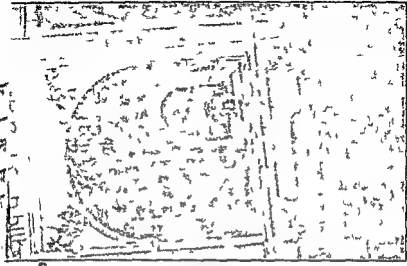
मनोरमां तां मथुरां पराकृतिम् ॥

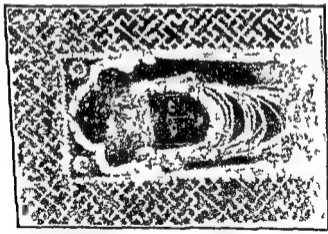
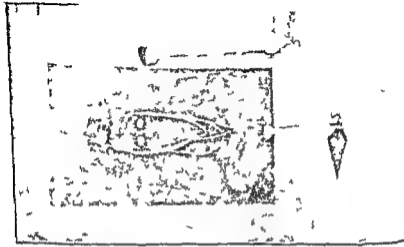
—इत्यादि

अथात् 'दुष्ट-दृश्यके लोप मेरी इम परम सुन्दर सनातन मथुरा-नगरीको नहीं जानते, जिससे सुरेन्द्र, नागेन्द्र तथा मुनीन्द्रोंने स्तुति की है और जो मेरा ही मरूप है।' मथुरा आदि-चाराह भूतेश्वर-श्रेय कहलाती है। मथुराके चारों ओर चार शिवमन्दिर हैं—पश्चिममें भूतेश्वरका, पूर्वमें पिप्पलेश्वरका, दक्षिणमें रमेश्वरका और उत्तरमें गौरर्षेश्वरका। चारों दिशाओंमें स्थित होनेके कारण शिवकाको मथुराका कोनकाळ कहते हैं। यानिकु चौकमें नील-चाराह और इवेत-चाराहके सुन्दर विशाल मन्दिर हैं। श्रीकृष्णके प्रपौत्र राजनामने श्रीकेशवदेवजीकी मूर्ति स्थापित की थी, पर औरगजेरके कालमें यह मज धाममें पधरा दी गयी। औरगजेरने मन्दिरको तोड़ डाला और उसके स्थानमें मसजिद खड़ी कर दी। बादमें उस मसजिदके पीछे दुमरा केशवदेवजीका मन्दिर बन गया है। प्राचीन केशव-मन्दिरके स्थानको 'केशव-कटरा' कहते हैं। गुदाइ होनेसे यहाँपर बहुत-सी ऐतिहासिक वस्तुएँ प्राप्त हुई थीं। मन्दिरके पास दक्षिणनी ओर पोतरा-कुण्ड है, जो देखनेमें बहुत सुन्दर तो नहीं, पर बहुत विशाल है। इसमें भीतर इतने बड़े-बड़े दालन हैं, जिनमें हजारों मनुष्य बैठ सजने हैं और कुण्डके बाहरमें कुछ मादम भी न हो। इसमें जल प्रायः सूख जाया करता है। इसीके पास वर्तमान कृष्ण-जन्मभूमिका मन्दिर है (वास्तविक कृष्ण-जन्म-



श्रीभूतेश्वरनाथ (ममुरा) पृ० २०





मूर्तियों के स्थानपर तो औरगञ्जेकी मस्जिद है, जिममें देवकी वसुदेवकी मूर्तियाँ हैं। उक्त स्थानको मन्लपुरा भी कहते हैं। इसी स्थानमें फंसके घाणूर, मुष्टिक, कूट, शल, तोशल आदि प्रसिद्ध मन्ल रहा करने थे। यहाँ एक पुराना गङ्गाजीका मन्दिर भी है और इस प्रातमें मूतेश्वर महादेवजीके पास कङ्काली-टीलेपर कङ्काली-देवी (कसफाली) का मन्दिर है। कङ्काली-टीलेमें भी खोदनेसे अनेक वस्तुएँ प्राप्त हुई थीं। यह कङ्काली बट बन गयी जाती है, जिसे देवकीकी कन्या समझकर कम्पने मारना चाहा था, पर जो उसके हाथसे छूटकर आकाशमें चली गयी थी। इससे आगे बलमद्रकुण्ड है और बलभद्र तथा जगन्नाथजीका मन्दिर है। इस ओरके कुओंका बल बड़ा स्वास्थ्यकर है। यहाँके कुओंमें नलद्वारा शहरको जल दिया जाता है।

और भी बहुत-से नवीन मन्दिर हैं। ये मय नगरके बाहर हैं। सबसे श्रेष्ठ, सुन्दर, सेवा-शृङ्गारका जहाँ अच्छा आनन्द रहता है, वह श्रीद्वारकाधीशका मन्दिर है। यह भेट गोरुजदास पारंग्यजीका बनवाया हुआ है, जो कि ग्वालियर-नाम्नके खजाची थे और कई करोड़की सम्पत्तिके मालिक थे। यह मन्दिर तृतीय पीढात्रिपति कौकरोलीके गोम्बामियोंके सुपुर्द है। उसके गर्भके लिये बहुत-से गौर लगे हुए हैं और भेट भी बहुत आती है। इसमें उत्सव बहुत होते हैं और नित्य साधु प्रसाद पाते हैं। अन्नकूटके अवसरपर हजारों ब्राह्मण और अन्य सेवाकरन प्रसाद पाते हैं और सालभरमें एक बार मयुराकी सिद्धमण्डली भी यहाँ प्रसाद ५ प्रातकाल शृङ्गारके पाछे माखन

मिथा आर रात्रिको गयनके पीछे मोहनभोगका प्रसाद सब दशनियोंको गौंटा जाता है। इस मन्दिरमें सस्कृत-पाठशाळा भी है। इसमें आयुर्वेदिक आर होमियोपैथिक दो चिकित्सालय भी हैं। श्रामद्वागवतकी कथा भी जिस दिनसे भगवान् विराजे हैं, उसी दिनसे नित्य प्रातःकाल होती है। रात्रिमें चार मनुष्य नाम कीर्तन करते हैं। शयनके समय प्रतिदिन बहुत-से साधु नाम कीर्तन करते हैं। गयनके अनन्तर श्रीमद्वागवतका पाठ भी नियमित होता है। इस प्रकार अहर्निश हरिस्मरण ही होना रहता है। प्रबन्ध-व्यवस्था भी बहुत सुन्दर है। यह मन्दिर सन् १८७० वि० में बना था। वास्तवमें यह मुराही शोभा है। श्रीद्वारकाधीशजीका चतुर्भुजी बड़ी ही अद्भुत श्रौंकी है। यहाँका शृङ्गार और पूजा-पद्धति बड़ी ही अलौकिक है। श्रीवल्लभ-सम्प्रदायके अनुसार यहाँकी सेवा-पूजा है। भगवान्के केवल भोग-रागके समय ही दर्शन होते हैं, और मन्दिरोंकी भौति सदा खुले नहीं रहते।

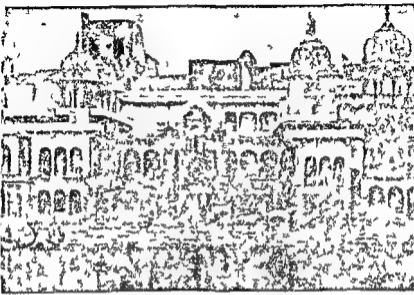
श्रीगोविन्ददेवजीका मन्दिर—यह रामगढ़निवासी सेठ गुरु-सहायमलजी पोगरका बनवाया हुआ है। इसमें भी उत्सव बहुत अच्छे होते हैं और भगवान्की मूर्ति बड़ी सुन्दर है। विद्यार्थी और साधु प्रतिदिन भोजन करते हैं। इसमें भी एक सुन्दर मस्कृत पाठशाळा है और अभ्यासियोंको चने भी बटने हैं।
श्रीकिशोरीरमणजीका मन्दिर—स्वर्गीय किशोरीजालजा कूँवरका बनवाया हुआ है। इसके आधिपत्यमें किशोरीरमण गन्स स्कूल है, जो बहुत उन्नत दशामें है। इस मन्दिरमें भी

उत्सव बहुत ही सुन्दर होते हैं। इसमें सोने-चाँदीका बना हुआ हिंडोला बहुत विचित्र है। इसमें भी विद्यार्थी, साधु नित्य भोजन करते हैं, कथा और कीर्तन होते हैं।

गोवर्धननाथजीका मन्दिर—इसमें पत्थरका काम बहुत ही सुन्दर है, जिसके फोटो लेनेको यूरोपियन आया करने हैं।
उदयपुरवाली रानीका मदनमोहनजीका मन्दिर—इसका भी प्रबन्ध अच्छा है। अभ्यागनोंको भोजन और चने मिलते हैं।
पिहारीजीका मन्दिर—इसे मऊके एक सेठने बनवाया है। आजकल यह मन्दिर श्रीनाथजीकी भेंट है। इसमें श्रीनाथ भण्डार स्थापित है।
मदनमोहनजीका मन्दिर—यह रामगढ़के रहनेवाले अनन्तराम सेठका बनवाया हुआ है। बड़ा विशाल है।
राधेश्यामजीका मन्दिर—यह उछाजवाली रानी श्यामकुँवरिका बनवाया हुआ है। असकुण्डाघाटपर हनुमान्जी, नृसिंहजी, नाराहजी, गणेशजीके मन्दिर हैं। इससे उत्तरकी तरफ प्राचीन विश्रामघाट था। मुसलमानी समयमें यह भ्रष्ट कर दिया गया और एक मजदूम साहबने मसजिद बना दी। इससे आगे राजा भरतपुरकी हवेली है जिसका फाटक व दरवाजा बहुत ही सुन्दर है। इससे आगे सेठ लक्ष्मीचन्दजीकी हवेली है। इसके सामने श्रीद्वारकाधीशजीका

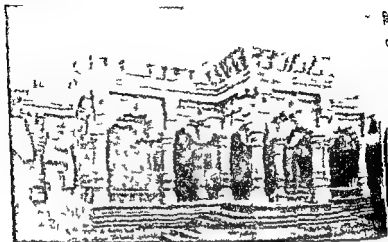
● ये पाँच मन्दिर स्वामीघाटपर हैं। इसका दूसरा नाम वसुदेवघाट भी है। मुनते हैं इसी रास्तेसे वसुदेवजी श्रीकृष्णको मथुरासे गोकुल ले गये थे। यह मथुराके सामने ही है इसमें इसको सामुद्रघाट भी प्रजमायाभ करा एक यमुना-मन्दिर है, जिसकी दशा अच्छी नहीं है,

पूर्वाक्ष मन्दिर है और इसीके प्राचर गठीमें मानिकर्षीके
 गाराहजीके दो मन्दिर हैं। द्वारकाधीशके मन्दिरसे आगे राधा
 कातजीका मन्दिर है। यह निम्बार्कसम्प्रदायका है। द्युजा
 नरेशके गुरु इसके महन्त हैं। उसने आगे धामहाप्रभुजीकी
 बैठक है। उससे आगे विश्राम या विश्रातघाट है। मथुरामें यही
 प्रगन तीर्थ है। नित्य प्रातःकाल और सायंकाल यहाँ श्रीयमुना
 जीकी आरती हुआ करती है। अच्छी शोभा होती है। श्रीकृष्ण
 भगवान्ने कंसको मारकर यहाँ विश्राम लिया था इसलिये इसका
 विश्रामघाट नाम हुआ या सांसारिक पयिकको विश्रान्ति मिलती
 है इससे विश्राम या विश्रातघाट नाम बना है। इस जगह
 नियागले महागज इक्यासी मन सोनेसे तुले थे और यह सोना
 ब्रजमें रँटा था। तीस मन सोनेसे केशके महाराज भी तुले थे।
 इस प्रकार सुवर्णकी ये दो बड़ी तुलारें हो चुकी हैं। जयपुर में
 राजोंने महाराजोंकी तुलारें भी हैं और वे तुलारें यहाँ बनी हुई भी
 हैं। विश्रामघाटपर कृष्णबलदेवजी, राधादामोदरजी, मुरझामनोहरजी,
 उन्मीनारायण, अन्नपूर्णा, विश्वनाथ, हनुमान्, धर्मराज, गोवर्धननाथ
 आदिके कई छोटे-छोटे मन्दिर हैं। यहाँपर चैत्र शुक्ल पञ्चमीको यमुना-
 जीके जन्मदिन, फूलडोलका बहुत उत्तम मेला होता है। यह
 विश्रातसे आगे सभी घाटोंपर होता है। दूसरा मेला यमद्वितीया
 को होता है। तीसरा कार्तिक शुक्ल दशमीको होता है, जब
 श्रीराम कृष्ण कंसको मारकर अपने सखाओंके वर्गके साथ विश्रान्त
 पर पधारते हैं। मथुरामें दो स्मशान हैं। एक दक्षिणमें भुवश्रेत्रपर,
 दूसरा उत्तरमें दशमधौधर। भुवश्रेत्रपर जानेवाले शवों (मुर्दों) का

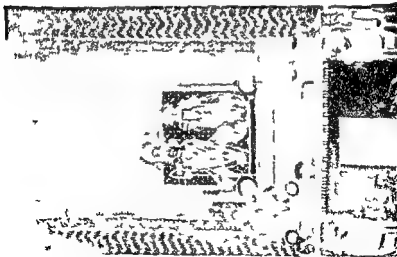


निश्रामघाट (मथुरा)





भिद्वारकाभीष्मजीका मन्दिर (मण्डिरा)



वेश्राम ओर विश्रामस्थानिक पिण्डदान विश्रामघाटपर, दशाश्वमे-
र जानेवालोंका चकतीर्थपर होता है ।

विश्रान्तसे पीछे वाजारमें गतश्रमनारायणजीका मन्दिर है ।
यह प्राणनाथजी शास्त्रीका बनवाया हुआ श्रीरामानुजसम्प्रदायका
है । इसके व्यय-निर्वाहार्थ गौर लगे हुए हैं । उससे पीछे पुराना
गतश्रमनारायणका मन्दिर भी है । यहाँ गोपालजीका भी प्राचीन
मन्दिर है । उससे आगे फंसखार है । यहाँ सम्जीमण्डी है और
पण्डित क्षेत्रपाल शर्माका बनवाया हुआ गढ़घर है । इससे
आगे सतवरा मुहल्ला है जिसमें पहले श्रीगुरुभाचार्यके सातों
स्वरूप निराजते थे ।

पालीवाल बोहराके बनवाये हुए मथुरानाथ, राधाकृष्ण,
दाऊजी, विजयगोविन्द, गोरननाथ आदिके मन्दिर हैं । रामजी
द्वारेमें श्रीरामजीका मन्दिर है । वहाँ श्रीगोपालजीकी अष्टभुजा
मूर्ति है, जिसमें चौबीस अतारोंकी मूर्तियोंके दर्शन होते हैं ।
रामनवमीके दिन यहाँ बहुत बड़ा मेला होता है । इन्हींके पास
कीलमठकी गलीमें स्वामी कीलजी महाराजकी गुफा है । ये ब्रह्म
पहुँचे हुए महात्मा हो गये हैं । इन्होंने अपने तपोव्रतोंके
की मुसलमानोंसे रक्षा की थी । इनका वेणीमात्रक (श्रीरामानुजसम्प्रदायका) है जो प्रयाग-घाटपर है ।
चौतरापर तुलसीजीका यामल्य है आर गौरीनाथजीका मन्दिर है ।
गोवर्धनसे आकर प्रथम रात्रिमें श्रीनाथजी यहाँ हैं ।
अथ मेवाड़में निराज रहे हैं । आगे चतुर्दश
का मन्दिर है, जो राजा पटनीमलजाने बनवाया है ।

मन्दिर है जिहान्दर का मथुराकी रक्षा का
इसके पास श्रीगोपालजीका मन्दिर है जो १२३
सम्प्रदायका है । छोटी दरवाजेके पास कंसनिकदनका
है । ये प्रभु भी यज्ञनामके पथराये हैं ।

इससे आगे चल्कर दाउजीका मन्दिर है । महोन्नीकी पै
पद्मनाभनीका मन्दिर है । य भी यज्ञनामके पथराये हुए हैं
होरीबाजारमें गोपीनाथजीका मन्दिर है । इसमें भी अभ्यागत भो
फरते हैं । धीयामण्डीमें सीतारामजा और जानकीजीवनजीके
मन्दिर हैं, इनमें भी अच्छे उरसन होने हैं । ये दोनों मन्दिर ईसरों
बनवाये हुए हैं । आगे चलकर दीर्घरिण्णुजीका मन्दिर है । यह
भी पटनीमलजीका बनवाया हुआ है । वाराहपुराणमें मथुराके जिन
मन्दिरोंका वर्णन है और कालवश वे नष्ट-भष्ट हो गये हैं उनमेंसे
कितनोंहीको राजा पटनीमन्त्रे बनवाया था जैसा कि वीरमन्त्रेश्वर
मन्दिरकी प्रशस्तिमें लिखा है—

सुविश्रुत	यज्ञवपु पुराणे	
	श्रीवीरभद्रेश्वरमन्दिर	यत् ।
अदृश्यता	कालवशादवाप्त	
	राज्ञा नव	तत्पटनीमलेन ॥
निर्माय	धर्मज्ञवरेण भूय	
	कृता प्रतिष्ठा विधिपूर्वक हि ।	
वाणाङ्गनागेन्दु (१८६५) मिते च वर्षे		
	वैशाखशुक्लत्रिकु (१३) सख्यतिथ्याम् ॥	

सीतलापाइसामें मथुरादेवी और गजापाइसेमें दाऊजीके एक चरणका चिह्न है। रामदासकी मण्डीमें मथुरानाथ भगवान् और मथुरानाथ महादेवके मन्दिर हैं। बहुत प्राचीन हैं। बंगलीघाटपर गोब्रह्मभाचार्य-कुलके गोस्वामियोंके बड़े मदनमोहनजी, छोट मदनमोहनजी, दाऊजी, गोकुण्डेशजीके मन्दिर हैं। नगरके बाहर ध्रुव मण्डिरपर ध्रुवजीका मन्दिर है। गालक ध्रुवजीने पाँच वर्षकी अवस्थामें ठ महीनेतक यहीं कठिन तप करके भगवान्को प्रसन्न किया था। यहाँपर ध्रुवजीके चरणचिह्न हैं। पहले यहाँ केवल चरणचिह्न और श्रीनिम्बाकाचार्यके पूज्य श्रीसर्वेश्वर और विश्वेश्वर श्रीशालग्राम भी थे जो घटनाग्रस्त अब सलेमाबादमें और उत्तीसगढ़में विराजते हैं। ध्रुवजीकी मूर्ति गोखामी श्रीलङ्गीलालजीकी पुरायी हुई है। ये चरणचिह्न उग्रनाभके स्थापन किये हुए हैं। इसी स्थानपर निम्बार्कसम्प्रदायके जगत्प्रसिद्ध श्रीकेशवकाश्मीरीजी विराजते थे। यह स्थान निम्बार्कसम्प्रदायका है। केशवकाश्मीरीजी भी बड़े विद्वान् और तपस्वी थे। इन्होंने भी मुसलमानोंसे हिन्दुओंकी रक्षा की थी। सप्तर्षिके टीलेपर अरुणतीसहित सप्तर्षियोंके दर्शन हैं। यह स्थान विष्णुस्वामिसम्प्रदायके विरक्तोंका है। गऊघाटपर विष्णुस्वामिसम्प्रदायका श्रीराधाविहारीजीका मन्दिर है। वैरागपुरामें विष्णुस्वामिसम्प्रदायके विरक्तोंके दो मन्दिर हैं। इनमेंसे एक नारायणदासजीका स्थल है जिसके कुएँका जल नजर (दृष्टिदोष) का निवारक है। इससे आगे मथुरासे पश्चिममें महाविद्यादेवीका मन्दिर है जो कि बहुत ऊँचे टीलेपर है। इसके नीचे आस-पास बड़ा भारी जंगल था, जो मत् १२५६ वि०

ह । रगेस्वर महादेव, सप्तसमुद्ररूप, शिवनाथ*, वनभद्ररूप^१
 भनेस्वर महादेव, पोतराकुण्ड, ज्ञानगपी (इसपर मुसलमान क
 करते जाने हैं, हिंदुओंको और हिंदुमन्त्रोंको इतर र
 नेना चाहिये ।), जमभूमि, केशराममन्दिर, कृष्णरूप कु
 रूप महाविद्या मरस्वनीनाला, मरस्वनीकुण्ड, मरस्वनीमन्दिर
 चामुण्डा, उत्तरकोटितीर्थ, गणेशतीर्थ, गोकर्णेश्वर महादेव, गीतमर्
 की ममापि, सेनापतिक नाट, मरस्वनासगम, दशाक्षमेरुघाट,
 अम्बरीपना टीरा, चरनीर्थ, कृष्णगङ्गा, फाशिनर महादेव, सोमनीर्थ,
 गौघाट, घण्टाकर्ण, मुक्तिनीर्थ, कर्मशिला, ब्रह्मनाट त्रैलोक्यघाट,
 धारापतन, असुदेवघाट, असितुण्डा, गाराहक्षेत्र, द्वारकाधीशक
 मन्दिर, मणिकर्णिकरघाट, महाप्रभुजीकी बैठक, विश्रामघाट—ये
 मथुराके परिक्रमाके स्थान हैं । दूर होनेके कारण अब इनमेंसे उत्तर
 दक्षिणके बहुत से स्थान परिक्राम ओड़ गे हैं । वस, मथुरामें बड़-बड़
 दर्शनीय मन्दिर और स्थान ये ही हैं और ओड़-घाट तो बहुत हैं ।

प्रकीर्णक

मृजियम—यह भी मथुरामें विचित्र स्थान है । इसमें ऐति-
 हासिक मूर्ति आदि वस्तुओंका अच्छा संग्रह है । यहाँ गायत्रीटीले
 मेंसे मिला हुआ एक पत्थर है जिसमें शेषजी, यमुनाजी और श्रीकृष्णको
 लिये हुए असुदेवजी दिखाये गये हैं । उनमें मरस्थ, कच्छप मगर
 भी बड़ी सुदरताके साथ दिखाये गये हैं । अतक इसके मन्त्रधर्म

● शिवनाथ भी राजा पटनीमन्त्रका बान्वाया हुआ है । पहले
 यह एक साधारण कुण्ड था। अब बहुत विशाल, पाषाणका बना हुआ है ।

† इनको ही सामीघाट कहते हैं ।

ब्रजकी भाँकी



ब्रजकी भोंकी



यह निश्चय हुआ है कि यह मूर्ति ईसासे दो सौ वर्ष पहलेकी है। केशवदेवजीके कटरेके पाम शिवाश्रम है, इसमें वेणुशाला है जिसमें मर्कटोयन्त्र, पलभायत्र आदिक खगोलसे सम्बन्ध रखनेवाले कई उत्तम यन्त्र हैं। यह विद्याकलानिधि ज्योतिर्विद् शिवप्रकाशलालजी द्विवेदीका निर्माण किया हुआ स्थान है। दर्शनीय है।

शिक्षा विभाग

मथुरामें दो कालेज और दो हाई स्कूल हैं—१ किशोरीरमण-कालेज, २ चम्पा अप्रमाल कालेज, ३ गवर्नमेण्ट हाई स्कूल, ४ मिशन हाई स्कूल, एक हिन्दी मिडिल स्कूल भी है। पहले जो मन्दिरोंके क्रमसे संस्कृत-पाठशाला लिख आये हैं उनके अतिरिक्त खर्गासी स्थानामग्न्य चौबे वैजनाथजी इटानियामीने शहरसे बाहर डेम्पीयर-नगरमें माथुरचतुर्भेद-विद्यालय स्थापित किया है। इसमें हिन्दी-अंग्रेजी शिक्षाके अतिरिक्त संस्कृतकी उत्तम परीक्षातककी शिक्षा दी जाती है। खर्गाय राजा सेठ लक्ष्मणदासजी C I, E सी० आई० ई० के मुनीम रायबहादुर मंगीलालजीके ज्येष्ठ पुत्र प्रसिद्ध मेठ नारायण-दासजीके द्रव्यसे बनी हुई एक नारायणदास-धर्मशाला है, जो मथुरासे कुछ दूर वृन्दावनकी सड़कपर है। इसमें भी एक संस्कृत-पाठशाला है, जिसमें काशीकी परीक्षाओंकी पढ़ाई होती है। यहाँ एक पुस्तकालय भी है। इसमें रामानुजीय वैष्णवोंके ठहरने तथा भोजनादिका प्रबंध है और अम्यागनोंको भी चने मिलने हैं। कुशाक मुहल्लेमें मारवाडी संस्कृत पाठशाला है। इसमें अनुमान तीस विद्यार्थी रहते हैं, भोजन करते हैं और पढ़ते हैं। कुछ साधु भी भोजन

धर्मशालाएँ

मथुरासे बाहर वृंदावन-दरवाजेसे आग चलकर बाबू मल्ल्या-सिंहजी भार्गवकी बनवायी हुई बड़ी सुन्दर पक्की संगीन धर्मशाला है। इसमें उच्चश्रेणी और निम्नश्रेणीके यात्रियोंके ठहरानेका पृथक् पृथक् प्रबंध है, परन्तु शहरसे दूर होनेके कारण उच्चश्रेणीके यात्री कम ठहरते हैं। इस धर्मशालाके पास नृसिंहन्द एक तप स्थल है, यहाँ नरहरि नामसे एक पहेँने हुए महात्मा हो गये हैं। इन्होंने चार सौ वर्षके होकर अपना शरीर त्याग किया था। माहेश्वरियोंकी धर्मशाला वृंदावन दरवाजेपर है, इसमें बराते अधिक ठहरती हैं। हाथरसवालोंकी धर्मशाला, बलरत्नवालोंकी धर्मशाला, सिन्धी धर्मशाला, बीकानेरियोंकी धर्मशाला, लुहाड़ोंकी धर्मशाला, माटियोंकी धर्मशाला, पजाबियोंकी धर्मशाला आदि सौसे ऊपर धर्मशालाएँ हैं। पर इनमें हाथरसवालोंकी और बलरत्नवालोंकी धर्मशालाएँ सच्ची धर्मशालाएँ हैं, क्योंकि इनमें सब देशोंके और सब जातियोंके उच्च वर्णके सज्जन ठहर सकते हैं। आरोंमें जिन देशवालोंने बनवायी हैं उन्हीं देशोंके मनुष्य ठहर सकते हैं। इनसे भी उच्च एक धर्मशाला और है जो महाराजा अत्रागढ़की बनवायी हुई है। इसमें हर एक हिन्दू अपनी इच्छाके अनुसार चाहे जितने दिन ठहर सकता है।

दरवाजे

मथुरामें चार दरवाजे हैं। १-भरतपुर दरवाजा, २-डीग-दरवाजा, ३-वृंदावन दरवाजा, ४-होली-दरवाजा। तीन दरवाजे तो केवल नाममात्रके हैं। इनमें दरवाजे नहीं हैं। होली दरवाजा बड़ा सुन्दर और विशाल पत्थरका बना हुआ है। फाटक इसमें भी

नहीं हैं। इसमें घण्टाघर है। इसे हार्डिंग कलक्टरने बनवाया था, इसीलिये इसे हार्डिंग-नोट भी कहते हैं।

अन्यान्य स्थान

होली दरवाजेके पास कुछ आगे चलकर रंगेश्वर महादेवका मंदिर है, उसके सामने कुछ आगे चलकर गर्नमेण्ट हास्पिटल (अस्पताल) है, जिसके दरवाजे और कुछ इमारतके लिये श्रीनाथजीके टीकायत गोस्वामीजीने पचास हजार रुपये दिये थे। किन्तु मथुराकी धार्मिक जनताके लिये यहाँ एक बड़े धर्मार्थ आयुर्वेदीय औषधालयकी विशेष आवश्यकता है। दो बैंके हैं—एक इलाहाबाद-बैंक, दूसरी इम्पीरियलबैंक। यहाँ सरकारी गोरों और फाल्सेकी फौज भी सदा रहा करती है। यमुनासे पार जानेके लिये पहले नायोंका पुल था, फिर छोहेके पीपोंका, उसके बाद फिर पक्का पुल बन गया है, जो अब कई सालसे फी (बे-टिकट) हो गया है। चार रेलवे-स्टेशन हैं—१ मथुराकैण्टोमेण्ट, २ मथुराजकशन, ३ मसानी (मथुरा सिटी), ४ भूतेश्वर। यहाँपर सरकारी कचहरियों भी कई हैं—कलक्टरी, तहसील, दो मुंसिफी और दो जजी। कचहरियोंके पास डिस्ट्रिक्टबोर्ड और गङ्गा-नहर, यमुना-नहरोंके दफ्तर हैं। म्यूनिसिपिन्टी भी है, जिसमें चार मुसलमान-मेम्बरो, एक शौवे मेम्बर और दो सरकारी मेम्बरोके स्थान संरक्षित (रिजर्व) हैं, शेष नौ मेम्बर पब्लिककी ओरसे चुने हुए हैं। इस कमेटीके द्वारा नगरकी सफाई, बिजलीकी रोशनी, नलका जल और स्वास्थ्यका प्रबन्ध होता है जो साधारणतः अच्छा है। जबसे अनिवार्य शिक्षा हुई है, तबसे म्यूनिसिपिन्टीने लोअर और अपर प्राइमरी

मदरसे बहुत बढ़ा दिये हैं और टाउनरकूल भी इसीके प्रयत्नमें है। अल्पजोंके त्रिये अलग पाठशाला है। कई कन्या पाठशालाएँ हैं। एक पटवारियोंका स्कूल भी है, पर यह म्युनिसिपैलिटीके अधीन नहीं है।

व्यापार

यहाँके पेड़े, खुरचन, सूतकी निगाह और डोर, तौबके करप, ठापुरजीके सलमा सिनारे और सोने चाँदीके मुकुट, किरिठ आदि शृंगार, चन्दन और हापीदौतके शेंवर, पत्ते आदि बहुत अच्छे बनते हैं। अब कपड़ोंकी सुन्दर छपाईका काम भी बहुत होने लगा है।

विद्वान्

पहले यहाँ एक-एक, दो-दो शास्त्रोंके पूर्ण ज्ञाता गणनायोग्य विद्वान् बहुत थे। यहाँके ही शिष्य दयानन्द सरस्वती थे। अब यह बात नहीं रही। पर अब भी व्याकरण, साहित्य-गणित (दृश्य और प्राचीन दोनों) वैयक, श्रीमद्भागवत, मन्त्रशास्त्र, धर्मशास्त्र, कर्मकाण्ड आदिके उत्तम विद्वान् समपानुसार विद्यमान हैं और प्रतिवर्ष परीक्षाचीर्णसे इनकी संख्या बढ़ती जाती है। मयुरा यमुनाजीके किनारेपर बसती है। परलीपारसे खडे होकर देखनेसे अपना रेलमें बैठे देखनेसे बड़ी शोभा दीवती है। पर अब घाटोंपरसे यमुनाके दृष्ट जानेसे और बीच-बीचमें रेती पड़ जानेसे बड़ा बुरा दृश्य दीखता है। अस्तु।



यात्रावर्णन

मधुवन

(महोलीगोंव) — यह गाँव मथुरासे दक्षिण पश्चिम, ६५ मील

या पाँच मीलकी दूरीपर है। यहाँ श्रीरामचन्द्रजीके भाई मधु दैत्यके किलेको नष्ट कर तथा वनको उजाड़कर मथुराको मारकर मधुपुरी बसायी थी। पीछे यही मथुरा मथुरा अनादिकालसे थी, पर मधु दैत्य और उसको उजाड़कर अपनी राक्षस तथा दैत्य प्रजापति या और सबका नाम मधुवन रख छोड़ा था। भेद है कि मथुरा सदासे यमुना-तटपर बसती हुई कुछ मील दूर है। सम्भव है कि प्राचीन वन—सब मिलाकर इतने फेरमें रहे है—पहले मथुराको भी मधुरा मधुपुरी एकके ही नाम हैं। चतुर्भुज, कुमरकल्याण तथा गुफा, महाप्रभुजीकी बैठक है। मेला होता है। इससे

तालवन (ताम्रवर्ण)

—हे, यहाँ श्रीमलरामजीने धेनुका मंदिर और यलदेवजीका मंदिर है।

कुमुदवन

—है। कपिल मुनिके दर्शन, छाल कदमके नीचे टाकुरजीकी बैठक, महाप्रमुनीजी, गुसाईंजीकी बैठकें और निहारकुण्ड है। इसमें कामठ बहुत होते हैं। यहाँसे छोटकर मधुवन जाना होता है।

यहाँसे सतोहाके मार्गमें—

गिरिधरपुर

—में चामुण्डादेवीके दर्शन हैं।

शन्तनुकुण्ड (सतोहागाँव)

इसमें शन्तनुकुण्ड, गिरिधारीजी, बलदेवजी और शन्तनुके मन्दिर हैं, गोसाईंजीकी बैठक है। मत्तानकी इच्छावाले इस कुण्डमें स्नान करते हैं और बलदेवजी तथा शन्तनु महाराजके मन्दिरके पीछे गोबरके सतिये (स्वस्तिक) रखने हैं। भादों सुदी छट्टिको यहाँ बड़ा मेला होता है और हर रविवारी मत्तमीको भी मेला होता है। इससे आगे—

दतियागाँव

—है, जहाँ मन्वानने भागकर आये हुए दत्तत्रयको मारा है, इस समय आप व्रजमें फिर आये थे। इससे आगे—

गन्धर्वेश्वर (गणेशारागाँव)

—है। यहाँ गन्धर्वकुण्ड है। इसमें आगे—

(खेचरीगाँव)

—है (यह पूतनाका गाँव है) 'सा खेचर्यैकदोपेत्य पूतना न दगोकुलम्'

यहाँ भी एक कुण्ड है। (त्रजके जितने घाम हैं, इनमें यात्राके अनुसार, जैसे हम लिख रहे हैं, वैसे भी पहुँच सकते हैं और मथुरासे स्वतन्त्र मार्गसे भी पहुँच सकते हैं।) इससे आगे—

बहुलावन (वाठीगाँव)

— है। यहाँ कृष्णकुण्ड, कृष्ण-अउदेवजी तथा बहुलागायक मन्दिर है। महाप्रभुजीकी बैठक है। इससे आगे—सरुनागाँव, बलभद्रकुण्ड और गोरे दाऊजीका मन्दिर है। इससे आगे—

तोपगाँव

— है। तोप भगवान्का सखा था, उसका यह गाँव है। यहाँ तोप-कुण्ड है। इससे आगे—

विहारवन

— है। यहाँ विहारवन, कदम्बखण्डी और चरणचिह्न हैं।

जाखिन (यक्षहनुगाँव)

यहाँ रोहिणीकुण्ड और नलदेवजीका मन्दिर है।

मुखराइ (मोक्षराजतीर्थ)

यहाँ मुखरा देवीका मन्दिर है। बाँकीसे दूसरा मार्ग और है—

रारगाँव

—में बलभद्रकुण्ड, बलभद्रमन्दिर और कुछ हटकर कदम्बखण्डी है।

जसोदीगाँव

—में सूर्यकुण्ड है।

बसोदीगाँव

-में बसंतकुण्ड, नटिताकुण्ड, राजयदम्ब वृक्षमें मुकुटका व
वदका वृक्ष हैं। यहाँ श्रीराधा-वृष्ण प्रथम ही श्रद्धा बूले हैं।

राधाकुण्ड

यहाँ राधाकुण्ड, वृष्णकुण्ड, राधावकुम्भ महाप्रभुजी, गोसाईंजी, गोकुलनाथजीकी नैटकें हैं। बंटक उमे कहते हैं कि जहाँ बैटकार इन जाचार्योंने श्रीमद्भागवतके सप्ताह-पारायण किये हैं। गोविन्ददेव (यहाँ गिरिराजकी जिह्वाके दर्शन हैं), पाण्डव-श्रीवृष्ण (वृक्षरूप) और बंगाली महात्माओंके स्थापन किये अनेक मन्दिर हैं। विष्णुस्वामिसम्प्रदायके प्रयागदत्तजी गोस्वामीकी धर्मशाळा है। राधाकुण्डमें बहुत से अविज्ञान बंगाली महात्मा निवास करते हैं। श्रीमहाप्रभु चैतन्यदेवके शरणार्थित श्रीरघुनाथदास गोस्वामी यहीं निराजते थे और वेबन मट्टा पीकर तपस्या करते थे। चैतन्य चरितामृतके रचयिता श्रीवृष्णदास गोस्वामीजी भी यहाँ रहे थे। जिस समय भगवान् श्रीवृष्णने अरिष्टासुरको मारा था जो कि बैलके रूपमें था, तब गोप और गोपियोंने भगवान्से कहा कि 'तुमको बैलके मारनेकी इत्था लगी है, सो किसी तीर्थमें स्नान करके शुद्ध होओ।' तब श्रीराधिकाजीने अपने श्रीहस्तोंसे धरती खोदकर जल निकालना प्रारम्भ किया। इधर श्रीवृष्णने भी उसी प्रकार कुण्ड खोदा। इस प्रकार राधाकुण्ड और वृष्णकुण्ड बने। तब राधाकुण्डमें भगवान्ने स्नान किया। वह अरिष्टासुर जहाँ मारा गया था, उस स्थानका नाम अरिष्टगाँव हुआ और आजकल उसे अर्दीग कहते हैं।



भीराबाकुण्ड

पृ० ४०



बुधम-शरीर

१०



मानवी गंगा, शाह महल (गोवर्द्धन)

१०

राधाकुण्डमें इतने तीर्थ ओर हैं । जैसे कि—गङ्गकुण्ड, विशाखाकुण्ड, ललिताकुण्ड, अष्टसखियोंके कुण्ड, गोपीकूप और इसके समीपमें उद्धवकुण्ड, जहाँ उद्धवजी एक रूपसे गुल्मलता बनकर निवास करते हैं और दूसरे रूपसे बदरिकाश्रममें । नारदकुण्ड और उद्धवजीके दर्शन हैं । इसके अनन्तर ग्वालपोखरा, रत्नसिंहासन तथा किलोडकुण्ड हैं ।

गोवर्धन

राधाकुण्डसे गोवर्धन तीन मील है । मार्गमें एक सरकारी पत्थर गढ़ा हुआ है, जिसमें शिकार खेलने, मोर, हिरण आदि मारनेके निपेयका हिन्दी, फारसी और अंग्रेजीमें फर्मान हैं । इसी बीचमें बहुत रमणीय और विशाल अत्यन्त सुन्दर नकासीके कामका पत्थरका बना हुआ पक्का एक तालाब है, जिसको कुसुमसरोवर (कुसुमोखर) कहते हैं, जिसे भरतपुरके राजा सूरजमलके लड़के जवाहरसिंहने दिल्लीकी छूटके द्रव्यसे बनवाया था । इससे पूर्व यह साधारण बना हुआ था । इसके पास राजा सूरजमल जवाहरसिंहकी विशाल छत्री भी है, जो देखने ही योग्य है । गोवर्धन सात फोसका पर्वत है । इसको गिरिराज भी कहते हैं । गिरिराजकी ऊँचाई पहले बहुत थी, अब बहुत गूँधी रह गयी है । पहले इनका दर्शन अड़ीगमे होता था, अब सौ-दो-सौ गजकी दूरीसे भी नहीं होना है । महानुभावोंसे ऐसा सुना है कि ज्यों-ज्यों कलियुग बढ़ता जाय, ये तिल-तिटभर पृथ्वीमें धँसते जाते हैं और किसी दिन ये ही समा जायेंगे । यहाँ भजनानदी बंगाली महासागर में

करते हैं। यही व्रजनामके पन्नाये हुए हरिदेवजी थे। पर औरंगजेबके समयमें वे वहाँसे चले गये। अब उस स्थानत दूसरा मूर्ति निराज रही है। यह मन्दिर बहुत सुन्दर है, इसके व्ययनिर्वाहार्थ कुछ गौय भी ली हैं। दूसरा मन्दिर चक्रेश्वर (शकलेश्वर) महादेवजीका है। यह भी व्रजनामके पन्नाये हुए हैं। महाप्रभुजीकी बैठक है। दूसरी ओर गोसाईंजीकी बैठक है। चरणके चिह्न और मनसादेवीके दर्शन हैं। यहाँसे आगे बसईगँव है, जहाँ नटरामजी बसे हैं। बसईकुण्ड, ब्रह्मकुण्ड है (पर इधर यात्रा नहीं जाती) मानसीगङ्गाके ऊपर गिरिराजजीका मुग्यारविन्द है, निम्नमें मुनुटकी आश्रुतिका प्रत्यक्ष दर्शन होता है, यही गिरिराजजीका पूजन हुआ करता है। गिरिराजजीके ऊपर और आसपास गोवर्धनगौव बस रहा है। आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमाको और कार्तिक कृष्ण अमानस्याको बड़ा मेला होता है। यहाँपर मानसी गङ्गा है। जिसको भगवान्ने अपने मनसे उत्पन्न किया था। इसके तीनों तरफ बड़े सुन्दर घाट बने हुए हैं, चौथी तरफ गिरिराजजी निराजमान हैं, यास्तमें मानसीगङ्गाके बीचमें गिरिराज हैं। यह एक अद्भुत दृश्य है। दीवालीके दिन इन घाटोंपर मनो घीके दीपक जलाये जाते हैं। उनकी जलने भीतर बड़ी शोभा दीखनी है। यहाँकी दीपावली बड़ी ही दर्शनीय है। पहले यह भरतपुर रायमें था।

मानसीगङ्गासे पश्चिम सकीतरा (सखीस्यलगाँव) है, जो चन्द्रानलिजीका शशुरालय है। गोवर्धनकी दण्डव्रती परिक्रमा भी बहुत दी जाती है। पहले, पृथ्वीपर लेट जाते हैं और जहाँ-

तक हाथ फैलाते हैं वहाँ अँगुलीसे लकीर खींच देते हैं और फिर उठकर उसी लकीरसे आगेकी ओर दण्डवत् प्रणाम करते हैं, इसी तरह दण्डवत् प्रणाम करते चले जाते हैं और एक अठारसे लेकर पंद्रह दिनतकमें इस प्रकारकी दण्डवती परिक्रमाको पूरी करते हैं। कोई-कोई एक जगह १०८ परिक्रमा करके तब आगे बढ़ते हैं। कुठ-न-कुठ यात्री प्रायः रोज ही परिक्रमा करते हैं। पूर्णिमाको अधिक परिक्रमा लगती है। (स्त्रियोंको दण्डवती परिक्रमा नहीं करनी चाहिये।) मानसीगङ्गापर श्रीलक्ष्मीनारायणजीका मन्दिर है जो कि उत्तर भारतमें श्रीरामानुजसम्प्रदायकी गोवर्धनगदीके नामसे प्रसिद्ध सिद्धस्थल है। गोवर्धनमें भरतपुरके राजाओंकी जनवायी हुई छत्रियाँ (समाधि) और दूसरी-दूसरी इमारतें बड़ी सुन्दर-सुन्दर हैं। एक-दो मन्दिर भी नये बने हुए अच्छे हैं। इसमें ये कुण्ड हैं— गौरोचन, धर्मरोचन, पापमोचन, श्रृणमोचन। इनमें पिठले तो वर्षा-श्रृणके सिना और श्रृणमें सूखे पड़े रहते हैं। पहले भी अच्छी दशामें नहीं हैं। एक निवृत्तकुण्ड भी है। यहाँ किशोरीलाल-धनायालय है और कुँवर सज्जनसिंहजी सिंहजीकी धर्मशाला है। प्रायः यात्री इसीमें बहुत टहरा करते हैं, क्योंकि यहाँ बहुत आराम मिलता है। और भी कई धर्मशालाएँ हैं, सफाखाने हैं, लड़के-लड़कियोंके स्कूल हैं। मथुरासे दीघको जो सड़क जाती है और गिरि गोवर्धनके ऊपर होकर जहाँपर निकलती है, वह स्थान दान-घाटी कहलाता है। यहाँ कृष्ण महाराज दान लिया करते थे और इस घाटीपर दानरायजीका मन्दिर भी है। इसी गोवर्धनके आस-पास बीस कोसके बीचमें सारखतकल्पमें घृदावन था और इसीके पास

यमुनाजी बहती थी। जैसा कि श्रीमद्भागवतमें लिखा है—

वृन्दावन गोवर्धन यमुनापुलिनानि च ।
वीक्ष्यासीदुत्तमा श्रीवी राममाधवोर्नृप ॥

(१० । ११ । ३६)

स्कन्दपुराणमें भी लिखा है—

अहो वृन्दावन रम्य यत्र गोवर्धनो गिरिः ।
बृहद्गीतमीय तन्त्रमें लिखा है—

पञ्चयोजनमेवास्ति एन मे देहरूपरुम् ।
कालिन्दीय सुपुञ्जाख्या परमानन्दवाहिनी ॥

जहाँ उस समय यमुनाजी बहती थी, वहाँ जमनाठतोर्णो
खवनक प्रसिद्ध है। यदि वर्तमान वृन्दावनको ही सारस्वतकल्पवृ
वृन्दावन माना जाय तो यह एक शङ्का उपस्थित होती।
कि ब्रह्मके बंद होनेपर इन्द्रने वर्षा करके ब्रजका नाश करना चाहा
था, तब गाय, गोप और गोपियोंकी प्रार्थनासे गोवर्धनको उठाने
भगवान्ने ब्रजकी रक्षा की थी। पर ऐसी वर्षा होते रहते गोप
गायें और उनके बच्चे तथा सब घरका सामान वर्तमान वृन्दावन
अठारह मील चलकर गोवर्धनतरु समुश्ल कैसे पहुँच सका या
इसलिये मानना ही पड़ेगा कि उस समय अर्थात् सारस्वतकल्प
गोवर्धनके पास ही वृन्दावन बसता था। वर्तमान वृन्दावनको वर्तमान
स्वैतवाराहकल्पका मान लेना उचित प्रतीत होता है। प्रतिकल्प
कुठ-कुठ झीलाओंमें भी तारतम्य हुआ करता है। अस्तु, यहाँसे

मार्ग हैं, एक तो सीधा चन्द्रसरोवरको, दूसरा 'जमनाउतो' होकर चन्द्रसरोवरको ।

जमनाउतोगाँव

यहाँ जमनाजीका निकुञ्ज है, यहाँ अष्टसखाओंमेंसे कुम्भनदास-बी निवास करते थे और आपके नामसे ही यहाँ पोखरा और खिड़क प्रसिद्ध है । आजकल यात्रा दानघाटीसे अड़ींग आदि स्थलोंमें होती हुई गोवर्धनके पूर्वभागसे पश्चिमभागको जाती है । पहले गोवर्धनसे 'ग्रहज' होकर 'परमदरे' जाती थी ।

अड़ींग अरिष्टगाँव अथवा अरिग्रहगाँव

अरिष्टगाँवके नामका कारण तो पहले लिखा गया है । पर फिल्टही महानुभावोंका कथन है कि कसके मरनेसे डरकर चमके आठ भाई मथुरासे भाग गये, उनको पकड़ने और मारनेके लिये बलभद्रजी पीछे-पीछे दौड़े और यहाँ आकर उनको पकड़ा तथा मारा । इससे इसका नाम 'अरिग्रह' और आजकल 'अड़ींग' हुआ । यहाँ बलदेवजीका मन्दिर और बलभद्रकुण्ड है । इससे भी यह कल्पना ठीक जँचती है । कोई कोई अरिष्टासुरकी कथाका सम्बन्ध भाण्डीरवनसे बताते हैं ।

माधुरीकुण्ड

यहाँ माधुरी-मोहनका मन्दिर है । अब डेरीफार्म भी यहाँ बन गया है, इसकी गायें बहुत सुंदर हैं । पर सुना जाता है कि यहाँ गायोंको फूका लगाकर दूहा जाता है, यदि ऐसा है तो बहुत अनर्थ है ।

भवनपुरा

यद् गौर भगवान्नामापाया है ।

दुवेलका गाँव दुवेलकुण्ड पारामौली

(परम रासस्यली)

यहाँ ही भगवान् नृन गोपियोंके साथ शरत्पूनोंको महारास किया था । रामघाँतग, चन्द्रशिरीका मन्दिर, महाप्रभुजी, गोसाँईजी गोकुलनाथजीकी घंटके हैं । भीनाथजीका जलघड़ा और हृद्रके झंघि नगाड़े पड़े हैं । बहुत बड़े और भारी दु-दुमीके आकरके दो पावर हैं, जिनमें चत्रागेमे नगाड़ोंकी-सी आवाज होती है ।

यहाँ चन्द्रसरोवर है । रामके प्रारम्भमें चन्द्रोदय होनेसे चन्द्रमाजी किरणोंसे उन रँग गया था और चन्द्रमाका प्रतिबिम्ब इस सरोवरमें दीला था । यहाँपर ही अष्टछापके अनुपम कवि श्रीसूरदासजीने निम्नलिखित अतिम पद गाया था—

खजन-नैन रूप रस माते ।

अतिमें चारु चपल अनियारे,

पल पिजरा न समाते ॥

चलि चलि जात निरुट स्रजननिके,

उलट पुलट ताटक फँदाते ।

'सूरदाम' अजन गुन अटके,

नतरु अबहि उड जाते ॥

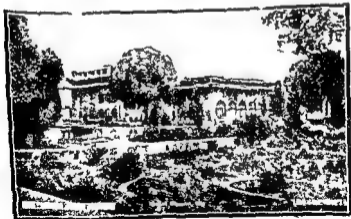
मोहकुण्ड पैठोगाँव

वज्रमें धुसनेको (अदर जानेको) पैठना कहने हैं—यहाँ



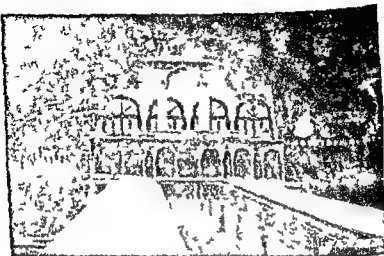
चन्द्रसरोवर

पृ० ४६



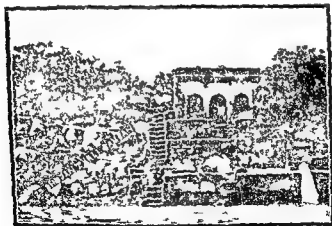
गोपालभवन (डीग)

पृ० ५०



सगमरमर मूला (डीगा)

पृ० ५१



मोजनयाली

पृ० ५४

कृष्णके पैठनेकी गुफा है। चतुर्भुजनायजीका मन्दिर है। नारायण-
है। लक्ष्मीरूप, ऐंठाकदम्ब, क्षीरसागर और बलमद्रकुण्ड हैं।

वल्लुगॉव (वत्सग्राम)

बठड़ोंके चरानेका स्थान। यहाँ ७ कुण्ड हैं—१ कनकसागर,
२ सहस्रकुण्ड, ३ (माखन-चोर ठाकुर) रामकुण्ड, ४ अबनारो-
कुण्ड, ५ (बरसनिहारी ठाकुर) रावरीकुण्ड, ६ सूर्यकुण्ड।

आन्यौर

इसके सम्बन्धमें ऐसा कहा करते हैं कि जब भगवान्‌ने
गोवर्धनकी पूजा की और अनकूटका भोग लगाया, तब आप ही बहुत
विशाल रूप धारण कर गिरिराजके ऊपर प्रत्यक्ष विराजमान होकर
चारों ओरसे भोग लगाने (भोजन करने) लगे। उस समय यह
भी कहते चाते थे कि 'आनो और' अर्थात् 'और लाओ' इसीसे
उस स्थानका नाम आनोर या 'आन्यौर' पड़ गया। यहाँ महाप्रमु-
जीकी बैठक है और 'गौरीकुण्ड' है। यहाँ श्रीराधिकाजीने गौरीका
पूजन किया है। यहाँसे फिर गिरिराजजीका पूर्वाय भाग मिलता
है। यहाँ गिरिराजजीमें कई प्रकारके निरक्षण चिह्न, दही-कटोरा,
टोपी, मोजा आदिके दर्शन होते हैं और सूर्यरुणकुण्ड, बलदेवजीका
मन्दिर है। बाजनीशिला—जिसमें छड़ी या अँगुठी लगानेसे आघाज
होती है। आगे—

केसरीकुण्ड, गन्धर्वकुण्ड, गोविन्दकुण्ड

हैं। यहाँ ही इन्द्रने और सुरभीने भगवान्‌का प्रसिद्ध गोविदा-

भिष्क क्रिया था । यहाँ ही भगवान्‌का गोविन्द नाम रक्ता ग्वा
था । गोविन्दकुण्डकी महिमा स्कन्दपुराण-वृष्णकुण्डमें है—

यत्राभिषिक्तो भगवान्‌मघोना यद्वैरिणा ।
गोविन्दकुण्ड तज्जात स्नानमाग्नेण मोक्षदम् ॥

महाप्रगुजीकी बैठक और चतुरानागाके यहाँ श्रीनाथजीके
दर्शन हैं । यहाँ गिरिराजमें ऊड़ी (लठी) का चिह्न है । मुकुट तथा
दस्ताक्षरके चिह्न ॥ । इससे दक्षिणकी ओर महादेवजी बैठे
हुए तथा श्रीराजदृष्णके दर्शन होने हैं, पर कुछ दूरसे लड़े होनेपर
होते हैं, पास जानेपर नहीं होने, केवल रेखा-से ही दीगने हैं । यह
इसमें विचित्रता है । इससे आगे सिद्धरीशिला है, जिसमें
हाथ लगानेसे हाथमें सुर्मा आ जाती है । आगे गिरिराजका अंतिम
भाग है, जिसे पूँछरी कहते हैं । यहाँ अप्सराकुण्ड, मरुतकुण्ड
है । 'पूँछरीको लौठा' नामक गोपका मन्दिर है । यहाँ रामदामजीकी
शुक्रा है । इससे आगे वृष्णदासजीभूतका कुआँ है । इससे आगे—

श्यामढाक

—६ । यहाँ गोपीतलाव, गोपसागर, श्यामढाक ठाकुरजीका
मन्दिर और जलघडा—ये चार स्थल हैं । श्यामतमालके
नीचे बैठक है और अनेक विचित्र चिह्न हैं । यहाँसे आगे
चारों ओर लीलास्थल हैं । इससे आगे-पीछेका क्रम नहीं है ।
'चरणजाटी' है, जहाँ श्रीठाकुरजी, सुरभी गाय, परारत हाथी,
उधै भ्रमा घोड़ाके चरण चिह्न हैं । इका बलदेवजीका मन्दिर, ऊपर
बैठे हुए बलदेवजी तलहट्टामें चरती हुई गायोंको 'डूक' डूककर

लेखने रहते थे । काजलीशिला (हाथको काल करनेवाली), सुरभीगुण्ड, एरागत कुण्ड और अष्टऊपके प्रसिद्ध कवि श्रीगोविन्द-सामीकी कदम्बखण्डी* और गुफा, हरजूकी पोखर, हरजूकुण्ड आदि स्थान हैं ।

जतीपुरा

इसमें श्रीगुरुभाचार्यके पंशज गोस्वामीकी सात गदियोंके सात मन्दिर हैं । यहाँ अन्नकूटके दर्शन अच्छे होते हैं । इसके अतिरिक्त गोस्वामियोंकी यात्रा जत्र यहाँ पहुँचती है तब भी अन्नकूटके से पदार्थ बनाकर भगवान्के भोग लगाते हैं । इसको 'कुनराड़ा' कहते हैं । यह कुनराड़ा जत्र तब किमी गोस्वामी अपना सेरकका मनोरथ होता है तब भी हो जाता है । जतीपुरामें भी गिरिराजजीका मुखारविन्द बतलाया जाता है । उस स्थानपर गोस्वामिन्द श्रीनाथजीका-सा बड़ा सुन्दर शृङ्गार करते हैं । मुखारविन्दपर दूध बहुत चढ़ाया जाता है । जिससे कि दूधका नाला सा बह निकलता है । यहाँपर छोटा सा मन्दिर बन जाना चाहिये । अथवा कुत्ते, कौए इसे अपवित्र करते हैं और प्रसादी दूध भी पैरोंमें आता है । महाप्रभुजीकी बैठक, नाभिका चिह्न, श्रीनाथजीके प्रकट होनेका स्थान है । जतीपुरामें गिरिराजमें कई कन्दराएँ हैं और गिरिराजके ऊपर बर्बाकी बूँदोंके चिह्न दिखायी पड़ते हैं । तलहटीमें (नीचे) श्रीराजिकाजीका तीजका चतूतरा, दण्डोनीशिला आदि हैं । आगे—

* कदम्बखण्डी या क्यार कदम्बोंके सघन वनका कहते हैं । इनमें चौक और बने होते हैं । यह दर्शनीय होते हैं ।

रुद्रकुण्ड (रुद्रकुण्ड)

—बूढ़े बानू महादेवकी मन्दिर, गुरुकुल, विष्णुगुहा है। यहाँ भगवान्की कन्दकरीका (देवकी) का मठ (संघान) है। एही शक्तिगुनीकी बैठक, जात्रनाट्य, पूजादि आदि स्थल है।

गाँडोलीगाँव

गोपियोंकी कौतुकान्त श्रेष्ठता गुणके उत्तरीय गरीबोंकी लुत्तवे सुपके गाँठ बौर दी है आर जब लगे उम्के पधारने लगे है तब बही हँसी की है। अहा—

कहत अमाने लोग, जहाँ गाँठ वहाँ रस नहीं।

धमत सरल रसमोग, गाँठजाँदाकी गाँठमें ॥

यहाँ भगवान् छोटी गेठी है। यहाँ गुम्बतकुण्ड, महाप्रभुजी की बैठक, सिजा (शम्पा) मन्दिर, टीकयो घनो, धैत्र (विजय गौर) आदि स्थल हैं। यहाँ बलभद्रकुण्ड और देवकीकुण्ड हैं। ये सब म्याग गावर्धनके आन-यास दोनों ओरके हैं।

डीग (लठान)

यहाँसे भरतपुरका राज्य प्रारम्भ हो जाना है और कामवनतक रहता है। इसीसे भरतपुरनरेशोंको बजेद्रकी पदवी है। पहले कभी सारा म्या इनके ही राज्यमें था। यहाँ भरतपुरनरेशके बनगाये दर्शनीय भवन हैं। उनमें फुहारे चलनेका अद्भुत आनन्द रहता है। विन्कुल कर्षा श्रुत चलक जाती है। ये फुहारे भादों बड़ा अमावस्यको चरते हैं, दाऊजाका मन्दिर है, भरतपुर राज्यका एक प्राचीन किला भी है। यहाँ एक सरोवर (रूपमागर) बड़ा सुन्दर है। डीगमें एक मार्ग—

नीवगाँव

—गया है। यहाँ श्रीनिम्बार्काचार्य निवास करते थे। दूसरा नीवगाँव महाननके पास है वहाँ उनका जन्म हुआ था। ये ही एक आचार्य एतदेशीय और सो भी ब्रजवासी हैं। अन्य तीनों आचार्य श्रीरिष्णुस्वामी, श्रीरामानुज, श्रीमध्व दाक्षिणात्य हैं। निम्बार्कसम्प्रदायके अन्य विद्वान् श्रीनिम्बार्कको भी दाक्षिणात्य ही बतलाते हैं। नीवगाँवको एक मार्ग गोवर्धनसे भी गया है। नीवगाँवसे आगे—

पाडरगाँव

—है। यहाँ पाडरगङ्गा है। कुञ्जरागाँव है। डीगसे दूसरा मार्ग—

परमदरे (परममन्दिर) गाँव

—को गया है। इसको 'प्रमोदन' भी कहा करते हैं। यहाँ कृष्णकुण्ड और श्रीदामाजीका मन्दिर है।

वहज (वज्री) गाँव

जहाँ इन्द्रने लज्जित होकर भगवान्की स्तुति की है। वेदशिरा, मुनिशीर्षगाँव हैं। परमदरेसे आगे—

आदिबद्री

—हैं। नन्दादि गोपोंको यहाँ ही बदरीनारायणका दर्शन कराया है। सेऊका गाँव, नयन सरोवर, अलखगङ्गा, खोह, फिर 'बड़े बद्री' और 'मानसरोवर' आदि बड़े अपूर्व मनोहर उत्तराखण्डके स्थल हैं। इनमें बीचमें नारायण और इधर-उधर चन्द्र-कुंजर हैं। इनमें व्याम, नर और बदरीनाथ हैं। एक

पहाड़में म्यान-म्याणपर बिच स्थानसे कौन म्यान कितनी दूर है, यह सुदा हुआ मिठना है। यह गौदिया गोश्यामियोंका परिश्रम है। खोहमें आगे श्वेत पर्यन्त, सुगन्धिशिला, नील पर्यन्त और आनन्दाद्रि (घाटी) हैं।

इन्दुरोलीगाँव

यह गौरी इन्दुरोलीगाँव है। इसमें इन्दुरोलीका निबुझ, इन्दुकुप, इन्दुपुण्ड हैं।

कामवन

इसको काम्यवन भी कहते हैं। पौषों पाण्डव वनवासके समय इसमें रहे थे। यह भी वृन्दावन है, यहाँ गोविन्ददेवजीके मन्दिरमें वृन्दादेवीका मन्दिर भी है। यहाँ भी श्रीकृष्णने दान अपना कर गोभियोसे लिया था। जैसा कि श्रीमद्भागवतमें लिखा है—‘कदाचि वृषचेष्टया’ और—

एष विहारं कौमारं कौमार जहतुर्जजे ।
निलायने सेतुन्धैर्मर्कटोत्प्लवनादिभि ॥

(१० । १४ । ६१)

ये लीलाएँ कामवनमें हुई हैं।

यहाँ चौरासी तीर्थ हैं। मधुसूदनपुण्ड, यशोदापुण्ड, सेतुवचरामेश्वर, चक्रतीर्थ, लङ्कापलङ्काकुण्ड, लुकलुकपुण्ड जिसे श्यामपुण्ड भी कहते हैं। लुकलुकरूदरा—यहाँ श्रीकृष्णचन्द्र आँखमिचीनी खेले हैं और कन्दरामें छिपकर पर्यन्तपर प्रकट हुए हैं, यँगी बजायी है। चरणपदाङ्गी, त्रिसपर भगवान्के अकृत्रिम

चरणचिद्रोंका दर्शन होना है । महोत्थिकुण्ड, उटकी-पसेरी । जब गोपियों यशोदाजीसे भगवान्की माखन-चोरीका उलाहना देने लगी हैं तब यशोदाजीने वे बड़े-पड़े पत्थर जिनमें एक त्रेटा है उसको उटकी बताकर, जो बड़ा है उसको पसेरी बताकर (जो वास्तवमें छट्ठाई और पाँच सेरमें बहुत भारी है) कह दिया कि इनसे माखन-दही तोलकर—

जाको जाको खायो सोई ले जाओ री ।

गारी मत दीजो मो गरीयनीको जायो री ॥

रत्नाकरसागर, ललिताजीकी गारहा, नन्दकूप, नन्दबैठक, मोतीकुण्ड, देवीकुण्ड, गयाकुण्ड, गदापर भगवान्के दर्शन, प्रयाग-कुण्ड, फाशीकुण्ड, गोमनीकुण्ड, श्रीदामादि पञ्चगोपकुण्ड, घोपरानी (यशोदा) कुण्ड, यशोदाजीका पीहर है । गोपराज पिताका नाम है । गोपीनाथजीका मन्दिर, चौरासी खम्भा—जिसके चौरामी खम्भे गिने नहीं जाते—श्रीकृष्णचेतन्य सम्प्रदायके गोपीनाथजी, गोविन्ददेवजी, भदनमोहनजी, रामान्ध्रभजीके मन्दिर, श्रीकृष्णभक्तसम्प्रदायके कृष्णचन्द्रमानी, नयनीतप्रियाजी, भदनमोहनजीके मन्दिर, श्वेतगणहका मन्दिर, सूर्यकुण्ड, गोपालकुण्ड, राधाकुण्ड, शीतलाकुण्ड, ब्रह्माजीका मन्दिर, ब्रह्माकुण्ड, श्रीकुण्ड, महाप्रभुजी, गोमार्तजी, गोकुलनाथजीकी बैठकें, खिनलनीशिला, कामसागर, व्योमासुरकी गुफा । व्योमासुर गोपका रूप धारण कर भगवान् और गोपोंके साथ खेडको खेडता हुआ खेलमें खेले जाते थे—

गुप्तमें डाठ आता था । भगवान्ने उमकी इम करारो देवकर उमे मारा और गेपोंके गुप्तसे निकाला । कठल, मुसु, दाग इनके सिद्ध हैं । नीचे उतरकर यज्ञेश्वरीके बायें चरणपर सिद्ध है (गपुरामें बलमन्त्रीके दक्षिण चरणपर सिद्ध है) ।

भोजन वाली—यहाँ पहाड़पर पचरकी स्तन सिद्ध अनक पात्रियों मनी हुई हैं । भोगकरोर, कृष्णकुण्ड, चरणकुण्ड, गरुडकुण्ड, रामकुण्ड, राममंदिर, अश्वमेधी गुफा, कामेश्वर महादेशवा मंदिर—ये महादेशव गणामके परराये हुए हैं । चन्द्रभागकुण्ड, पाराहकुण्ड, पौषों पाण्डवोंका मंदिर, चारों मुक्तोंके महादेश, धर्मकुण्ड, धर्मरूप, पञ्चनीर्थ, मनमन्त्राकुण्ड, इन्द्रमन्दिर, शिवकुण्ड—यह तीर्थराज है—हिंदोलेश्वर स्थान, सुनहरी कदम्बखण्डी, रासमण्डलका चवूतरा, कुम्भमें जलशशा, विहारका स्थान, यहाँ सन्धियोंन कृष्णोंकी सेन शौरशा कृष्णके लिये बनायी है । फूलोंके पत्थेमें श्रम दूर किया है । यहाँपर जावकरे सिद्ध हैं । इन नामोंके देखनमें स्पष्ट प्रतीत होता है कि यह भी कृष्णदावन है । यहाँसे भी आदिवरी स्थापना मार्ग गया है । पूर्वाक्त कुण्डोंमेंसे बहुत में सूख गये हैं । बहुतोंका पना भी नहीं है । कामवनसे आगे—

कनारोगाँव

—है । यहाँ भगवान् हिंदोलेश्वरमें झूठे हैं, यहाँ कृष्णके और दाउजीके वान जिंटे हैं । ऐसा कोई कोई कहते हैं । यहाँ कर्णकुण्ड है, सुनहराकी कदम्बखण्डी है, पनिहराकुण्ड, कृष्णकुण्ड, ठाकुरजीकी बैठक, काका कन्टमन्त्रीकी बैठक इत्यादि हैं । इससे आगे—

चित्र-विचित्र शिला

—है। इसमें रेखाओंके चिह्न हैं और ऊपन कटोराओंके चिह्न हैं। राधानीके चरणचिह्न हैं, माणिकशिला और देहकुण्ड हैं। इससे आगे—

ऊँचोगाँव

—है। यह श्रीवलदेवजीकी लीलाभूमि है। यहाँ श्रीजलदेवजीका रासमण्डल है। सयोगतीर्थ है। श्रीरागादृष्णका यहाँ विवाह हुआ है ऐसा भी कोई-कोई मानते हैं। यह गाँव श्रीललिताजीकी जन्म-भूमि है ऐसा कहते हैं। यहाँ परममत्त महाविद्वान् श्रीनारायणभञ्जी हो गये हैं। जिन्होंने ब्रजमहिमाके सम्बन्धमें १०८ ग्रन्थ बनाये हैं। नदगाँव और बरसानेके निगसी इन्हींके शिष्य हैं। यहाँ भी श्रीविश्वसुत्रामिसम्प्रदायके गोस्वामियोंका एक दर्शनीय मन्दिर है। ऊँचोगाँवसे आगे भानोखर (भानुसरोवर), वृषमानु-कुण्ड, रागदीकुण्ड, पौनदी (खड़ाऊ) कुण्ड, शीतलकुण्ड, तिलककुण्ड, ललितानुण्ड, निशाखानुण्ड, कुहककुण्ड, मोरनुण्ड, जलविहारकुण्ड, दोहनीकुण्ड, यहाँ नदगाँवकी गाँवकी दोहनी धोयी जाती थी। यहाँ ही पहले-पहल श्रीयशोदाजीने श्रीराधा-कृष्णके युगल जोड़ीके दर्शन किये थे और ईदरसे प्रार्थना की थी कि मेरे ललाका निगइ इसी लानीके साथ हो, सूर्यकुण्ड, नौवारी-चौवारी-म्यान और रत्नकुण्ड है। आगे—

डभारोगाँव

—है,

सम्बिका गाँव है।

वरमाना

इसको बरसानु, महासानु और वृषमानुपुर भी कहा करते हैं। यहाँ एक छोटी-सी पहाड़ी है। यह वृषमानु और कीर्ति रानीक राजधानी है। यह पहाड़ी प्रयाजीका रूप है। इसके जो चार शिखर हैं वे ही चार मुख हैं। (इसी प्रकार नन्दगौरमें जो पहाड़ी है वह शिवजीका रूप है और गोरधन त्रिपुका रूप है) यहाँ मोरकुटी, मानगृह (गढ़) है, जहाँ मानवती राधाजीको भगवान्ने बनाया था। विहासगढ़ (गृह), मकीर्णपय (सौकरीखोर)—यहाँ एक विचित्रता है। दोनों पहाड़ोंका अङ्ग रूप नाबने से आकारका एक ही पत्थर है जो धरतीपर जम रहा है। इसकी विचित्रता देखनेसे ही मादम होनी है। बरसानेके दूसरी ओर एक छोटी पहाड़ी और है, इन दोनों पहाड़ियोंकी द्राणा (खा) में बरसाना बसा है। दोनों पर्वत जहाँ मिलते हैं, वहाँ ऐसा एक तग घाटी है कि अनेक मनुष्य भी कठिनतासे निकल सकता है। इस स्थानका नाम सौकरीखोर है। भागे सुदी अष्टमीसे चतुर्दशीतक यहाँ बहुत सुन्दर मेला होता है और इसी प्रकार फागुन सुदी अष्टमी, नवमी और दशमीको होलीकी खींग होती है। यहाँकी होली दर्शनीय है।

विहारवन, गह्वर (गहर) वन

यह बहुत ही रमणीक स्थान है। शङ्खका चिह्न, महा प्रभुजीकी बैठक, दानगढ़—यहाँ जयपुरके महाराज माधवसिंह-



श्रीलक्ष्मी (राजाजी) का मंदिर (वाराणासी)

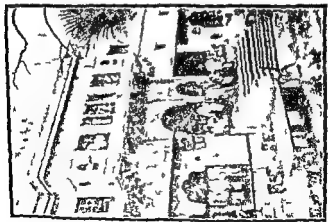
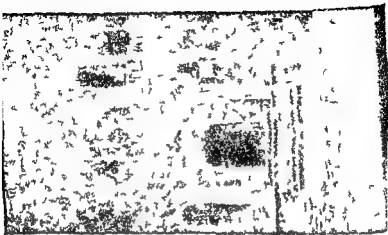
बरसाना

इसको बरसानु, ब्रह्मसानु और वृषभानुपुर भी कहा करते हैं। यहाँ एक छोटी-सी पहाड़ी है। यह वृषभानु और कीर्ति रानाकी राजधानी है। यह पहाड़ी ब्रह्माजीका रूप है। इसके जो चार शिखर हैं वे ही चार मुख हैं। (इसी प्रकार नन्दगौरमें जो पहाड़ी है वह शिवजीका रूप है और गोवर्धन त्रिपुण्ड्र रूप है) यहाँ मोरकुटी, मानगृह (गढ़) है, जहाँ मानवती राधाजीको भगवान् ने मनाया था। बिलासगढ़ (गृह), सकीर्णपथ (सौकरीखोर)—यहाँ एक विचित्रता है। दोनों पहाड़ोंका अङ्ग-रूप नाथके से आकारका एक ही पत्थर है जो घरतीपर जम रहा है। इसकी विचित्रता देखनेसे ही माझम होनी है। बरसानेके दूसरी ओर एक छोटी पहाड़ी और है, इन दोनों पहाड़ियोंका द्राणी (खी) में बरसाना बसा है। दोनों परत जहाँ मिलत हैं, वहाँ ऐसी एक तग घाटी है कि अकेला मनुष्य भी कठिनतासे निकल सकता है। इसी स्थानका नाम सौकरीखोर है। भादो सुदी अष्टमीसे चतुर्दशीतक यहाँ बहुत सुन्दर मेला होता है और इसी प्रकार फाल्गुन सुदी अष्टमी, नवमी और दशमीको होठकी लीला होती है। यहाँकी होली दर्शनीय है।

बिहारवन, गहवर (गहर) वन

यह बहुत ही रमणीक स्थान है। शङ्खका चिह्न, महा-प्रभुजीकी बैठक, दानगढ़—यहाँ जयपुरके महाराज माधवसिंह-

जकी भाँकी



जीना बनवाया हुआ मन्दिर बहुत सुन्दर है, जयपुरकी पत्थरकी कारीगरी देखनेयोग्य है। गायके स्तनोंका चिह्न, लाडलीजी (राजाजी) का मन्दिर—यही यहाँ प्रधान है। नारायणभट्टजीके स्थित नारायणदासजी ब्राह्मण यहाँ भजन किया करते थे। उनको स्वप्नमें श्रीलाडलीजीने दर्शन दिये कि जहा बैठकर तू भजन करता है उसके नीचे मैं हूँ। मुझे निकाल ले ओर मेरा मन्दिर बना। उन्होंने यह समझकर कि न तो मुझसे मन्दिर बन सकेगा, न सेवा-पूजा हो सकेगी और भजनमें विन्न होगा, मूर्ति न निकरनी। फिर स्वप्न हुआ तब उसने धरती खोदकर महारानीको निराख्य और कुटी बनाकर उनकी सेवा-पूजा करने लगा। फिर स्वप्नमें ही निराह करनेकी उसे आज्ञा हुई और कुछ दिन राठे एक ब्राह्मणने अपनी कन्या उसे ग्याह दी। उसीके वंशपर वरसानेके गोसाईं हैं—ऐसा लोग कहा करते हैं। जब पहाड़ीके नीचेसे इस मन्दिरपर दृष्टि जाती है तब बड़ी शोभा दीखती है। तब लाडलीजीके मन्दिरसे सीढ़ियोंपर नीचे उतरते हैं तब बीच में राजाजीके पितामह महिभानुका मन्दिर आता है। दूसरा मन्दिर वृषभानुका है। जिसमें वृषभानुजीकी पूरी मूर्ति है और एक ओर श्रीराधिकाजी हैं तथा दूसरी ओर राधिकाजीके भाई श्री रामाजी हैं। राधिकाजीकी ललिता, विशाखा, चम्पकलता, रगदेवी, चित्रलेखा, इन्दुलेखा, सुदेवी, तुल्लविद्या—इन अष्ट सखियोंके मन्दिर हैं। वरसानेमें सनाढ्य ब्राह्मण रूपराम कटारेके बनवाये हुए महल, सरोवर बहुत हैं। ये ब्राह्मण बड़े पण्डित, बड़े धनी और बड़े उदार थे। मुसलमानोंने वरसानेका भी बहुत नाश

किया था । चिकमौली (चित्रशाली), मुक्ताकुण्ड, पीपरे (प्रियाकुण्ड)—यहाँ श्रीप्रियाजी अम्यङ्ग उद्धर्तन करके लाने की थी । यहाँ यह भी प्रसिद्ध है कि राजिकाजीने (विवाहके पीछे) अपने पीले हाथ यहाँ धोये हैं, इसमें इसका नाम पारीपोछा हो गया है । पीड़खोर—यहाँ पीड़के वृक्ष बहुत हैं, इसमें आने—

प्रेमसरोवर

—है यह बहुत विशाल, बड़ा सुन्दर सरोवर है । यहाँ महाप्रभुकीसे बैठक है । यहाँ रामगढ़निवासी सेठ घनश्यामदासजीके पुत्र सेठ स्वामी नारायणजी पोदारका बनगया हुआ श्रीराधा-गोपालजीका मन्दिर है, जहाँ एक संस्कृत पाठशाला है । यहाँपर अक्षय अतसत्र है चाहे जितने अम्याङ्ग आये सबको टाल आटा दिया जाता है । ब्राह्मणोंको भोजन कराया जाता है और जो कोई रिश्तेदार निदान् यहाँ पधारते हैं उनको भी प्रसाद दिया जाता है । विधवा धर्मियोंको भी आमान यहाँसे ही मिलता है । भादोंमें और फान्गुनमें बस मेले होते हैं । इस मन्दिरसे प्रेमसरोवरकी शोभा है और प्रेमसरोवरसे इस मन्दिरकी । प्रेमसरोवर बरसाने ओर नन्दगोंवके बीचमें है । राधागोपालजीके मन्दिरके सम्प्रधमें साहित्येदु सेठ श्रीक हैवालालजी पोदारने यह कहा है—

उत आगत है नँदलाल इते अलि आत रही वृषभानुकुमारी ।
 निच प्रेमसरोवर भेंट भई यह प्रेम निकुञ्ज नवीन निहारी ॥
 चित चाहतु है इत ही रहिये यह कीन्ह विनय प्रियसों जच प्यारी ।
 तच नित्य निवास क्रियो इत है मिलिराधे गुनिंद निकुञ्जविहारी ॥

प्रेमसरोवरमें रासचौतरा, प्रेमनिहारीका मन्दिर और
बहुलनाथजीकी बैठक है।

इससे आगे—

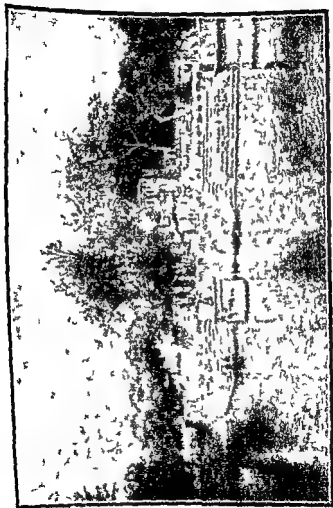
सकेत

जहाँ समय-समयपर श्रीराजा और श्रीकृष्ण मिला करते थे।
ऐसी प्रसिद्धि है कि ब्रह्माजीने श्रीकृष्णका विवाह श्रीराधिका-
के साथ यहाँ ही कराया था। इसीसे पीरीपोखरवाली
भी प्रसिद्ध हुई है। यहाँ रासमण्डलका चबूतरा,
का म्यान, रगमहल, श्यामन्दिर, विह्वलादेवी, विह्वलकुण्ड
सकेत निहारीका मन्दिर आदि म्यान हैं। महाप्रभुजीकी
क है। और राधारमणजीका मन्दिर, श्रीकृष्णचेतय महाप्रभुकी
क है। इससे आगे—

रीठौरा (रिखेरा) गाँव

यह चन्द्रावलीजीका गाँव है। यहाँ चन्द्रावलीकुण्ड है, चन्द्रावली
की बैठक है। चन्द्रावलीजीका कुञ्जभवन है। ठाकुरजीकी
क, महाप्रभुजीकी बैठक है। यशोदामन्दिर, ललितामन्दिर,
व्रताकुञ्ज, रासमण्डलका चौतरा, हिंडोलेका म्यान, विशाखाजीकी
क, विशाखाकुण्ड प्रियालकुण्ड, कदम्बकुञ्ज, मधुसूदनकुण्ड,
नकुण्ड—भगवाँकी रूप-माधुरीको देखकर ब्रजवासी मोहित हो
सुप सुप नदी रही, तब भगवान्ने वशी बनाकर उनको
वेन किया, उस दिनमे ब्रजवासियोंने भगवाँका मोहन नाम
दा। हाऊ विलाऊ—यहाँ यशोदाजीने श्रीकृष्णको डराया है—
मव जाओ लला मेरे हाऊ आयो है'

दधि बिलोनेका माट—यह इतना बड़ा है कि इसमें एक आदमी ठिपकर बैठ सकता है । पद्मतीर्थ, बेठकुण्ड, पनिहारी गौव पनिहारीकुण्ड—श्रीयशोदाजीके घर यहाँसे ही जाता था, उसीको भगवान् पीन थे । चरणपहाड़ी, भगवान्के चरणचिह्न हैं । नदगौव, चौडोखर (चरणकुण्ड), रोहिणी-मोहिनीकुण्ड, गायोंका गूँटा, गायोंका डिब्बा 'पान-सरोवर' (पान सरोवर)—यह भी एक दर्शनीय स्थान है । श्रीगुरुभाचार्यजीकी बैठक, श्रीसनानन गोस्वामीजीकी कुटी, मोतीकुण्ड, पुलवारी-उसाम, रामपीपरी (काठ पीरठ) दर कदम्ब, श्रीरूपगोस्वामीकी कुटी, वृष्णकुण्ड, आशुकुण्ड, धारोद्वर महादन, वृष्णकुण्ड, जलविहार, कुहककुण्ड, छाउकुण्ड, उडिहारी देवी, जोगियाकुण्ड, वृक्षकी खोतरमें भण्डार, अनूरबेटक-अनूरजी वृष्णको लिपाने गये यह लीला, बलकुण्ड, बलकुण्ड ललिता मोहन निशाखा उद्वरकुण्ड, उद्वरके क्यार—कदम्ब वृक्षोंकी क्यारी—हैं । इनमेंसे एक वृक्षमें स्नान करने उत्पन्न हुई जिनमें ठाँकमर वस्तु आ मके स्तोत्रका पात बनाय ले दोना उद्वरकी बैठक—जहाँ उद्वरजीने गोपियोंको श्रीवृष्णका स्नान सुनाया है । नदपोखरा, यशोदाकुण्ड, मधुसूदनकुण्ड, वृष्ण (नरसिंहा) नाद, नदराय, श्रीकृष्ण, बलदन, यशोदा एक मन्दिर विराज रहे हैं । यही प्रधान मन्दिर है । यह बहुत विशाल सुन्दर है । नदीश्वर महादेव—ये वज्रनामके पराये हुए 'देखो री एक बाल योगी द्वारे मेरे आया है री ।' यह लीला यशोदानन्दन, विहारीजी और चतुरानागके ठाकुर हैं ।



प्रेमस्येवर

पृ० ५८

ब्रजरी भौंरी



नन्दगाँव

को नन्दिग्राम कहते हैं, यह नन्दबानाकी राजधानी है ।
 इसके ऊपर बसा है । पहाड़के ऊपर श्रीराधाजीके
 और श्रीकृष्णचन्द्रजीके चरणचिह्न हैं । नन्दीनरके वायु-
 में 'गेंदोखर' गेंद खेलनेका स्थान है । कदम्बरन—
 हाँ दाऊजीके भगवान्ने चरण दावे हैं । महिरानोगाँव—
 मिनन्द गोपकी गोशाला । साचौलीगाँव, गिडोयोगाँव, नन्दगाँवसे
 जावस्ट, पाडरगंगा (पीरन), किशोरीकुण्ड, कोकिलाग्र
 जानवटसे पश्चिम)—जहाँ कोयलकी भौंति आप बोले हैं ।
 तीसे 'कोकिलाखरभूषण' आपका नाम है । सधन वृक्षोंका बहुत
 न्दर बन है । इससे आगे पूर्णमामीकुण्ड (पूर्णमासी श्रीनन्दकी
 रोहितानी हैं), दामन (दोऊ मिलन), कदम्बखण्डी, रुनकी
 नयीकुण्ड, कजरीरन, कृष्णकुण्ड, अँजनोगाँव, अँजनोखर
 अञ्जनकुण्ड) है । अँजनीशिला है । इसमें एक विचित्रता है
 ; शिलापर उँगनी रगड़नेसे कोई चिह्न नहीं होता है पर उसी
 हठीको आँखोंमें लगानेसे आँखोंमें अञ्जन लगा-सा मादम देता
 । यहाँ श्रीकृष्णने श्रीराधाजीके नयनोंमें अञ्जन लगाया था ।
 सी भक्तने कहा है—

धन्या गोकुलकन्या वयमिह मन्यामहे जगति ।

यामां नयनसरोजे अञ्जनभूतो निरञ्जनो वमति ॥



सीपरसोंगॉव (शीघ्र परश्व)

-है जउ अकूरजीके साथ भगवान् मथुराको पधारे हैं और गौ विहल होकर रथके नीच मरनेके लिये आने लगी हैं तब भगवान् कहा है--'शीघ्र परसों ही जाऊँगा।' इसपर मरने कहा है 'परसों पिया आमन कह जु गये कर आयेगी रैन यह पर
गोकुण्ड--यहाँ गिलासबट ह, हससरोर, सारसन--
भगवान्ने पुष्पचयन करके राजाजीकी बेनी रूँधी थी।

पसायोगॉव

-कदम्बखण्डी--यहाँ जउ श्रीकृष्णजीको प्यास लगी तब श्रीराधिकाजी सखियोंसहित जल लायी और श्रीठाकुरजीको पिछाया यहाँ दूपाकुण्ड और विशाखाकुण्ड हैं। खदिरमन (खायरो)--यहाँ गायोंका गिडक है, कुण्डलमन--यहाँ भगवान्के कुण्डल लगे गये थे, जिन्हें गोपियोंने हूँकर भगवान्को पहनाया था मदनकुण्ड, डकाराकुण्ड, चिन्तारपुरी, गोपीनाथजी और दाऊजीके दर्शन, बटमद्रकुण्ड, निम्नकुण्ड, चीर-तन्हाई, बरुस (बकाम्बड)--यहाँ भगवान्ने बकासुरको मारा था। मिद्वान भोजनम्यली, मदारल (माडागार)--सकी धाराहपुराणकी बड़ी प्रशंसा है--कमई (निशाखाजीका जन्मस्थान)--

करहला

-(रजिताजाका जन्मस्थान) बकणकुण्ड, कदम्बखण्डी, हिंडोलाक स्थान, महाप्रमजी, गोसाईंजी और गोकुटनाथजीकी बैठकें हैं करहलामें गुह, सरस रसलीला करनगले कई भक्त हो गये हैं और

अब भी है। श्रीनाथजीके मुमुटके दर्शन हैं। वृषमानुजीका उपवन है। निरोडी, सहार—यहाँ महेश्वरकुण्ड, माणिकुण्ड है। इसमें भूमि खोदनेसे एक पुराना मन्दिर और पुरानी मस्तुएँ निकली थीं। साखी (शहचूड़के वनका स्थान)—यहाँ रामकुण्ड है। गरुड—इसमें किशोरीकुण्ड, चीरकुण्ड, हिडोलेका स्थान है। हिडोलेका स्थान उसको कहते हैं जहाँ वृक्ष इस प्रकारसे खड़े हों (जो हिडोला बना हुआ है।) गोंधके दूसरी ओर पाडरकुण्ड है।

पाडरकुण्डके सामने नरकुण्ड है। यहाँ पाँचों पाण्डव और रावणके वृक्ष हैं। कोकिलावन—जहाँ कोकिलाकुण्ड, कृष्णकुण्ड, निहारीकुण्ड, महाप्रभुजीकी बैठक, पाण्डवगङ्गाम्थान हैं। उमें बड़ सघन वृक्ष हैं और यह बहुत बड़ा वन है, देखने-योग्य है। बड़ी बटैन—जहाँ बलभद्रकुण्ड, दाऊजीका मन्दिर। जेटी बटैन—यहाँ कृष्णकुण्ड, साक्षीगोपालका मन्दिर है।

वैन्दोखर

यहाँ चरणगङ्गा, चरणपहाड़ी—इसमें सूर्य, चन्द्रमा, गौ, घोडा री ठाकुरजीके चरणोंके चिह्न हैं। पौदानाथजीके दर्शन, पौंका खिड़क है। यहाँ गो-दोहन करके मट्टोंमें दूध भरकर दगौर भेजा जाता था। ये सब स्थल बरसाने नद-के आस पास चारों ओर हैं। इनमें आगे-पीछेका क्रम नहीं। इनमें बरसानेसे भी जा सकने हैं और न दगौरसे भी।

रासौलीग्राम

यहाँ रासमण्डलका चबूतरा, रासकुण्ड, श्रीनाथजीका जलघड़ा, नाथजीकी बैठक है। श्रीनाथजीके जलघड़ेके आगे—

कामरगाँव

—है (मैया मेरी कामर जान लई) । कामरमें गोपीकुण्ड, गोपी जलविहार, हरिकुण्ड, मोहनकुण्ड, मोहनमीका मन्दिर, दुर्गासाजीका मन्दिर ह ।

दधिगाँव (दहगाँव)

यहाँ भगवान्ने दधिडीठाकी हे । यहाँ दधिकुण्ड, दधिहारीदेरी, मजभूषण मन्दिर (वृक्षमें), मुकुटका चिह्न, सात सखियोंका क्रीडा स्थान—यहाँ भादों सुदी पशुकी मेला होता है । यहाँ वेणु नाद करके और नाम ले लेकर वनमें दूर गयी गायोंको भगवान्ने बुलाया है—'वेणुनाह्वयति गा म यत्वा हि ।' (श्रीमद्भागवत) कोटवन—भगवान्ने लताभोजा यहाँ कोट बनवाया है । यहाँ कदम्बखण्डी है । यहाँ महाप्रभुजीकी बैठक है । यहीं यशोशजीरो भगवान्ने रास दिखलाया है । चमेलीवन—यहाँ राम, लक्ष्मण, मीताजी, हनुमान् नामके कुण्ड और हनुमान्जीका मन्दिर है । गहनवन, गोपालगढ़, गोपालकुण्ड, उत्सवन, फारैन—यहाँ होलीकी लीला की है । यहाँ प्रह्लादकुण्ड है । यहा होलिका दहनके दिन एक ब्राह्मण जो पीके फइलाता है सारे दिन निर्जल बन करता हे और होलीके समय कुण्डमें छान करके जलती हुई होली जिसके पास होला भूजनेको भी लोग खड़े नहीं रह सकने उसके बीचमें होकर निकलता हे । होलीको पाठकर निकउनेसे उस गाँवका नाम फारैन हुआ हे । फारैनमे आगे—

शेषशायी

यहाँ दाऊजीने शेषजीका और भगवान्‌ने लक्ष्मी-नारायणजीका रूप धारण किया है। यह रूप अपने गाल बाल मखाओंको दिखाया है। पोढानाथके दर्शन, क्षीर-सागर, हिंडोलेका स्थान, दूसरी ओर महाप्रभुजीकी बैठक है। यहाँसे कोसीको मार्ग जाता है। नदगोंगसे भी कोसीको मार्ग जाता है पर यात्राके और स्थान रह जाते हैं इसमें यही मार्ग ठीक है।

कोसी

नान और कपासकी बहुत बड़ी मण्डी है। इसको कुशस्थली भी कहते हैं। इसमें रत्नाकरकुण्ड, मायाकुण्ड, विशाखा-कुण्ड और गोमतीकुण्ड हैं। यहाँ दशहरा और चैत सुदी द्वितीयाको फूलडोलका मेला होता है।

छाता

कोसीसे दक्षिणमें है, यह मथुरा जिलेकी एक तहसील है। कभी श्रीकृष्णने यहाँ अत्र धारण-लीला की थी। इससे इसका नाम छाता हुआ। यहाँ छत्रवन था (अत्र नहीं है)। यहाँ सूर्यकुण्ड है जो नगरसे अत्र कुछ अलग है। कोई-कोई कोसी नहीं जाते हैं। उनका मार्ग शेषशायीसे नदनवन, चन्दनवन, बुखराईताल, बुखराईसे बढाघाट, यहाँ कालीदहकी लीला है। श्रीमद्भागवतकी कालियमर्दनकी यहाँ ही होनी चाहिये। उझानीघाट, खेलनवन, लालबा, शेरगढ़ है। दूसरा मार्ग कोसीसे

यहाँमे पै (पय) गौर, श्यामकुण्ड, मारदकुण्ड, प्रहादकुण्ड, चतुर्भुजनाथ और रातिकार्व का मन्दिर है । यहाँमे आगे—

शेरगढ़

—है । दाऊजान द्वारवासे आकर रास किया है और उमी समय एलसे यमुनाजीको लांचा है । यहाँ रामघाटमें गोरे दाऊजीका मन्दिर है । यहाँ यमुनाजी अबनक लिखी-सी दीखती हैं । उससे आगे मशघाट है । यहाँ मशजीने तप करके बठइ चुरानेका दोष क्षमा कराया है । उसके आगे आभूषणवन है, जहाँ गोपियोंने भगवान्का शृङ्गार फलोंमे किया है । उसमे आगे निवारणवन—जहाँ शृङ्गारनिवारण किया है । यहाँ निगादेने फूल बहुत होते हैं । गुञ्जावन*—यहाँ गुञ्जा (चिरमिठी) की माग बनाकर गोपियोंने भगवान्का शृङ्गार किया है । भीमनागमत (१० । १४ । १) में लिखा है—

‘गुञ्जावतसपरिपिच्छलसन्मुखाय’

विहारवन—विहारीजीके दर्शन और विहारकुण्ड है । कजरौटगोंसे आगे दूसरी ओर अक्षयवट, अक्षय विहारीके दर्शन । गोपी-तलाई—जहाँ भगवान्ने गोपियोंको अनेक लीलाएँ प्रकट दिखायी हैं । स्फटिकमणिके शालग्रामजी—जिनमें कुनवाड़ेके से दर्शन होते हैं ।

* आभूषणवन, निवारणवन और गुञ्जावन—इन तीनों वनोंका यमुनाजीने काट दिया है ।

बल्लभोचन, कात्यायनीघाट और चीरघाट

यहाँ भगवान्‌के पति होनेके निमित्त कात्यायनीका व्रत गोप-
कन्याओंने किया था, पर यमुनाजीमें नगे होकर स्नान करती थीं,
उस दोषको दूर करनेके लिये और उस कुप्रथाको हटानेके लिये
और उनकी प्रेमाभक्तिको बढ़ानेके लिये भगवान्‌ उनके बल्लोंको
घाटपरसे उठाकर कदम्बके उपर जा बैठे। फिर उनकी प्रार्थनासे
उनके बल्ल उनको दिये। यहाँ चीरकदम्ब और कात्यायनीदेवीके
दर्शन हैं। महाप्रभुजीकी बठक हं, आगे—

नन्दघाट

—है, जहाँ नन्दबाबा नित्य स्नान और सन्या किया करते थे।
एक दिन यहाँसे ही वरुणजीका दूत नन्दरायजीको पकड़कर ले
गया था और श्रीकृष्ण ऋणलोकमें जाकर न दयावाको लाये थे।
यहाँ नन्दबाबाके दर्शन हैं। उसके पास भयगौंठ है, नन्दरायको
वरुणका दूत जब ले गया तब गोपीको भय हुआ था, इससे उस
स्थानका नाम भयगौंठ पड़ गया। उसके पास—

बसईगौंठ

—है। यह बसुदेवजीका गौंठ है। यहाँ बसुदेवकुण्ड है। उससे आगे—

बत्सवन

—है, जहाँ बत्सविहारी ठाकुरजीका मन्दिर है और महाप्रभुजीकी
बैठक, गालमण्डलीका स्थान, गालकुण्ड और हरिबोळ-तीर्थ हैं।
यहाँ भगवान्‌ बउड़ोंको चराया करते थे। ब्रह्मकुण्ड—जहाँ ब्रह्मा-
जीने बउड़े चुराये थे। उसके पास—

रासौलीगाँव

—है । यहाँ दाऊजीके राममण्डलका चौतरा है उसके पास सेऽगाँव है और उसके पास आटसगाँव है, जहाँ देवी आटस और गोपात्र आटस—ये दो गाँव प्रसिद्ध हैं । चौराहाके दो मार्ग हैं, एक तो यह ऊपर टिकवा जा चुका है, दूसरा यमुना पार होकर सुरभिवन, मुज्राठपी, मेखवन, ल्हाओका दर्शन, मद्रवन, भाण्णीवन, श्यामवन, श्यामकुण्ड, श्यामजी और श्रीदामाजीके मन्दिर, मठ, बटवन । यहाँ महाप्रभुजीकी बंटक है । यहाँसे यमुनाके इस पार घूटागन है । अथवा आटसगाँवसे राममण्डल—जहाँ भगवान् रामचन्द्रजीका स्वर्ूप धारण किया । उससे आगे—

नरी-सेमरीगाँव

—है । यहाँ बलदेवजीका मन्दिर है । नरीमें नरीदेरी और किशोरीकुण्ड हैं । सेमरी श्यामगमनीका अपभ्रश है । नरी, सेमरी—दोनों भीराधिकारीकी सेरक सन्धियाँ हैं और वज्रकीर्णी देवी हैं । थड़ी-थड़ी दूरसे भक्तजन नरदुर्गाओंमें पूजन करने जाते हैं । नारायणकुण्ड है । इससे आगे—

चौमुहागाँव

—है । यह चतुर्मुखका अपभ्रश है । बउड़ोंको बुरानेके बाद वज्रजी यहाँ आये और भगवान्का यथास्तु नित्य विहार देखा चतुर्मुखमे आश्चर्यचकित होकर भगवान्को देखने रहे और प्रणवके स्तुति करने लगे । श्रीमद्भागवतमें लिखा है—

स्पृष्ट्वा चतुर्मुकुटफोटिभिरङ्घ्रियुग्म

नत्वा मुदश्रुसुजलैरकृताभिपेरुम् ॥

(१० । १३ । ६२)

—यहाँ उस लीलाका निदर्शन है ।

आजही

श्रीकृष्णने जब अघासुरको मारा था और ब्रह्माजी बालक-बछड़ों-को चुराकर ले गये थे तथा एक वर्षके अनन्तर लौटाकर लाये तब बालकोंने ब्रजमें जाकर कहा था—

अद्यानेन महाव्यालो यशोदानन्दसन्नुना ।

हतोऽविता वय चास्मादिति बाला त्रजे जगु. ॥

(भाग० १० । १४ । ४८)

—आज ही इस नन्दनन्दनने महासर्प (अघासुर) को मारा और हमें बचाया । वही यह 'आजही' गौर है । यहाँ यात्रा नहीं जाती । इस गौवमें ऐसा दृढ़ प्रबन्ध है कि गाय-बैल-बछड़े बेचे नहीं जाते । यदि कोई चोरीसे बेच दे ओर मातृम हो जाय तो उसे कठोर जातिदण्ड दिया जाता है । यदि ऐसा सर्पत्र हो जावे तो स्वयं गोरक्षा हो जाय ।

जैत

यहाँ कृष्णगुण्ड है । इसमें एक पत्थरका बना हुआ विशाल सर्प है, जो अघासुरका निदर्शन है ।

छटीकरा

यहाँ सखियोंके छै मुझभजन हैं । राधिकानीका गुमभजन है ।

गरुड़ गोविन्द

जब मगगान्ते गोवर्गन परंन धारण किया था तब गरुड़की सेवा करन पयारे थे—ये उम ममयके दर्शन हैं । गोविन्दकी बारह भुजाएँ हैं और गरुड़पर विराज रहे हैं । ये गरुड़ गोविन्दकी भी मगगाभके पयारे हैं, ऐसा बशोक्त पुजारी पयारे हैं । मगगामियोंने एक पलेठी बना रकभी है—'पौच हायके मन्दिरों बारह एाके ठाकुरजी' गरुड़ गोविन्दने एक मार्गसे—

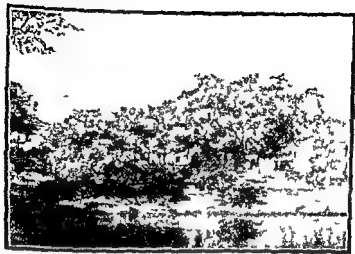
अकूरघाट, अकूरगाँव

—है (दूमे मागसे ये घृदावनसे पीछे आगे है), जहाँ अकूरजीको मगगान्ते इन्द्रानसे मथुरा आगे ममय यमुनानीमें अपने स्वरूपके दर्शन कराये थे । यहाँ ही घृहासेन रागको शात कपिन यह पयाया था, उमीके मशज बारहसेनी दृश्य हैं । यहाँ गोपीनाथजी का मंदिर है । पैशाव शुभ मामीका यहाँ भेग होना है । उसने पास—

भतरोड

—है, जहाँ यकृता मगगोंकी धमपत्तियोंन मगगान्ते और म्वाउत्राओंका भोजन कराया था । कानिक शुभ पूर्णमासीको यहाँ मेठा हुआ करता है । कोई कोई मथुरातक यात्रा पूरी करके फिर अकूरजीके और भतरोडके दर्शन करते हैं । यही ठीक भी है । भतरोडका स्थान श्रीविष्णुस्वामिमप्रदायका है । मदनटेर मदन गोपालजीका दर्शन । उससे आगे घृदावन है ।



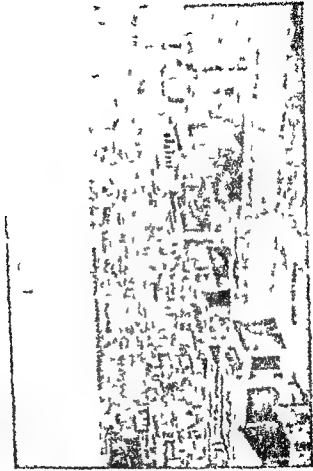


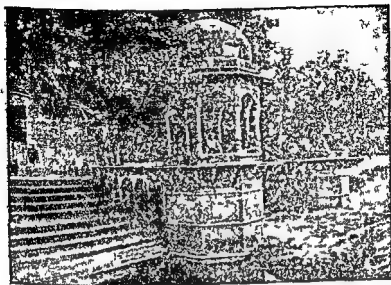
श्याम-कुण्ड

पृ० ६८

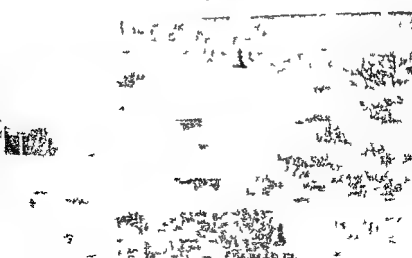


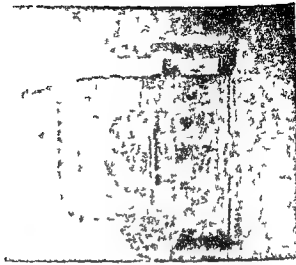
ब्रजनी भौंती





कालीदह (बृदावन)





मदनमोहन मीना मठ (बनारस)

वृन्दावन (श्रीवन)

कालीदह (कालियहद), जहाँ भगवान्ने कालियनागको मर्दन करके यहाँसे निकाला था । वहाँ कालियमर्दन ठाकुरजीके दर्शन हैं ।

युगलघाट—यहाँ युगलकिशोरजीका मन्दिर है । इसके पास मदनमोहनजीका मन्दिर है । बगाली गोस्वामी श्रीसनातनजीको यह मूर्ति मिली थी । उसके सम्बन्धमें यह किम्बदन्ती है कि यह श्रीविग्रह मथुरामें किसी चौबेजीके पास था, जिनको सनातनगोस्वामी वृन्दावन ले गये । जिन चौबेजीके पास यह विग्रह था उनको असकुण्डा राजारमें मदनमोहनजीकी जायदादमेंसे एक दुकान मिली हुई है । अबसे यह मूर्ति करौली पवारी है तबसे करौलीके मदनमोहनजीके मन्दिरसे उन्हीं चौबेजीके वशजोंको सौ रुपये सालाना अगतक मिल रहे हैं । पर श्रीनरहरि चक्रवर्तीजी बनायी हुई तीन सौ वर्ष की पुरानी बगला पुस्तक 'भक्तिरत्नाकर' में इस मूर्तिकी प्राप्ति महात्मसे बतलाई गयी है । किसी रामदास नामक पञ्जाबी सेठने लाल पत्थरका बहुत सुन्दर मदनमोहनजीका मन्दिर बनाया था । मगन उषीटनके समय वे मदनमोहनजी करौली पधराये गये । उसके पीछे दूसरा मन्दिर बंगाली बाबू नन्दकुमार घोषने बनवाया, उसमें दूसरी मदनमोहनजीकी मूर्ति स्थापित की गयी ।

अद्वैत—श्रीअद्वैत गोस्वामीजीकी तपोभूमि । अष्ट सखियोंका मन्दिर बहुत सुन्दर दर्शन है ।

श्रीबाँकेविहारीजीका मन्दिर—ये स्वामी श्रीहरिदासजीके पू य द्रव हैं । बड़ी मनोहर मूर्ति है । यहाँ सब ही बातें विलक्षण हैं । सवेरे दस बजेसे पहले तो आप उठते ही नहीं हैं । दर्शन होतेमें भी क्षण-क्षणमें पर्दा आ जाता है । वर्षदिनमें एक ही दिन अक्षयतृतीयाको चरणोंके दर्शन होते हैं । गर्भरमें एक ही दिन आश्विन शुक्ल पूर्णमासीको मुकुट और वंशी धारण करते हैं । एक ही दिन श्रावण शुक्ल तृतीयाको हिंडोलेमें झूलते हैं । दूध भात आपका प्रधान भोग है । मन्दिरमें शङ्ख, घण्टा घड़ियाल, मृदङ्ग आदि किसी प्रकारका त्राजा नहीं बजता है । स्वामी श्रीहरिदासजी बड़ पहुँचे हुए साधु थे, जिनकी कुटीपर तानसेनका चेला बननर अरुबर बादशाह आया था ।

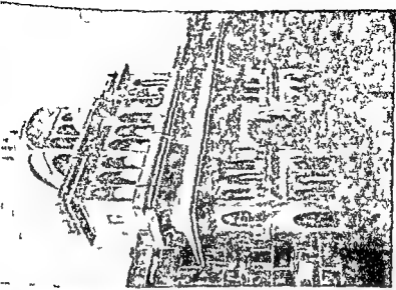
श्रीबाँकेविहारीजीके प्राकट्यके सम्बन्धमें यह प्रसिद्धि है कि श्रीहरिदास स्वामी निविन्ममें भजन-भूजन करते थे, वही पृथ्वीके नीचे श्रीबाँकेविहारीजी विराजमान थे और वे श्रीहरिदास स्वामीसे बातें करते थे । एक दिन आज्ञा की कि मुझे पृथ्वीसे निकालकर मेरी विधिन्तु सेवा-भूजा करो । स्वामीजीने आज्ञानुसार कार्य किया । इस प्रकार उनकी प्राकट्य हुआ, पीछेसे यह मन्दिर बना ।

श्रीबाँकेविहारीजीके दर्शन एक साथ देरतक नहीं हो सकते । क्षण-क्षणमें पर्दा बदलता रहता है । इसके सम्बन्धमें ऐसी किन्तदत्ती है कि श्रीबाँकेविहारीजीकी परम मनोहर आर बाँकी झाँकीपर रीझकर एक मक बहूत देरतक टकटकी लगाये देखना रहा और श्रीबाँकेविहारीजी उसके प्रेमके वशीभूत होकर



श्रीश्रीराधाचन्द्रमजीकी साँकी (बुदावन)

पृ० ७२



सेवाकुल (बृदावली)



उमके साथ चले गये । पीछे पुजारियोंकी उड़ी त्रिनयपर पधारे । तबमे ऐसा नियम हे कि कोई एक साथ बहुत देरतक दर्शन न करने पावे । पर्दा उदलना रहता है । भक्तोंके भाव ही तो हैं, इनमें तर्कको स्थान नहीं । श्रीबोंकेविहारीजीकी मूर्ति बड़ी ही मनोमोहक और चित्ताकर्षक है ।

आगे स्वामी श्रीहितहरिवंशजीके दर्शन, श्रीराधावल्लभजीके दर्शन हैं । ये स्वामी श्रीहरिवंशजीके पूज्य इष्टदेव हैं । स्वामी श्रीहरिवंश भी बड़े प्रतापी महात्मा थे । राधावल्लभजीके भोगमें खिचड़ी नामी वस्तु है ।

श्रीराधावल्लभजीके सम्बन्धमें यह बताया जाता है कि गोस्वामी श्रीहितहरिवंशजी देवउदके रहनेवाले थे । वे देवउदसे श्रीचृन्दावन आ रहे थे । रास्तेमें वे चटपावल गाँवमें ठहरे । यहाँ एक आत्म देव नामक ब्राह्मणके यहाँ यही श्रीराधावल्लभजीके श्रीप्रसह थे । दर्शन करते ही गोस्वामीजी मुग्ध हो गये । आत्मदेवने यह मूर्ति गोस्वामीजीकी भेंट की और अपनी दोनों कन्याओंका पाणिग्रहण संस्कार भी गोस्वामीजीके साथ कर लिया । गोस्वामीजी श्रीराधावल्लभजीकी मूर्तिको लेकर श्रीचृन्दावनमें आये और वहाँ संवत् १५६५ में श्रीराधावल्लभजीकी स्थापना की । श्रीहितहरिवंशजी गोस्वामीके तीन पत्नी थी । दोके वंश चले । आज भी श्रीराधावल्लभजीकी सेवा-पूजा इत्यादि वंशजोंमें है ।

दानगली, मागली, यमुनागरी, कुल्लगली, गृहकारवट,
३ । भेशकुल्लमें रगमहल है, जिसमें श्रीराधावल्लभजीका

विचित्र चित्र पट और शय्याके दर्शन होते हैं। उलितागुण्ड है उलिताग है। श्याम तमालके वृक्ष हैं जिनकी गोंठ गोंठमें शाल प्रामर्जाके दर्शन होते हैं। यह श्रीराधा कृष्णके नित्यविहारका स्थल है। यहाँ रात्रिमें कोई नहीं रहने पाता। बदरतक भी जो दिनमें यहाँ असग्य बेटे रहते हैं रातमें यहाँसे चले जाते हैं। यदि फोड़ रातमें ठिपकर रह जाता है तो सबेरे मरा हुआ या सुमूर्ध मिलता है। यहां अनेक प्रकारके फलोंकी सुगन्ध आया करती है। यहाँ बहुतोंको भगवान्की रासलीलाके प्रत्यक्ष दर्शन हुए हैं। अभीतक जगलभी हां तरह है। घोड़े दिनोंसे एक बगली ने यहाँ संगमरमरका एक ठोटा-मा मन्दिर बनवाया है, उसमें युगल सरकारका सेवा पूजा होती है।

शृङ्गारवट—यहाँ श्रीराधिकानीकी बैठक है। श्रीराधिकाजी के चरणचिह्न हैं।

सग मनके शालप्रामर्जाका मन्दिर लोडगाजारमें है। इतने घड़े शालप्रामर्जा भी और कहीं देखनेमें नहीं आते हैं।

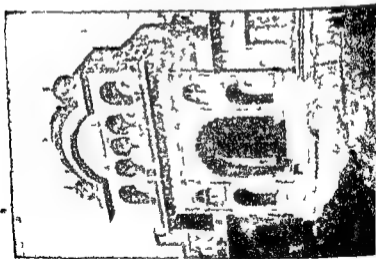
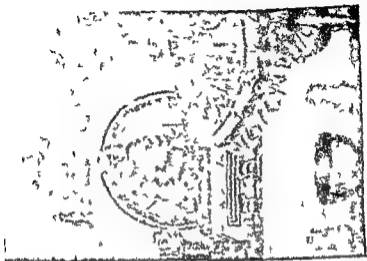
शाहविहारीलाळगीका बनवाया हुआ ठोटे राधारमणजीका मन्दिर है, जिसमें संगमरमरके खम्भ, पुतलियों और जालीके कटावने काम उड़ सुन्दर हैं। मन्दिर देखने ही योग्य है। मेरा भी बड़े मयुर भावसे होनी है। वसतपधमीको भगवान् उसती कमरामें विराजते हैं। बड़ी शोभा होनी है। श्रीवृन्दावनके दर्शनीय मन्दिरोंमें यह एक ही मन्दिर है।

निर्मल—इसीमें स्वामी श्रीहस्तिदासजी विराजते थे। यहाँ



दादविहारीलालजीका मन्दिर (नृ दारन)

नन्का भारी

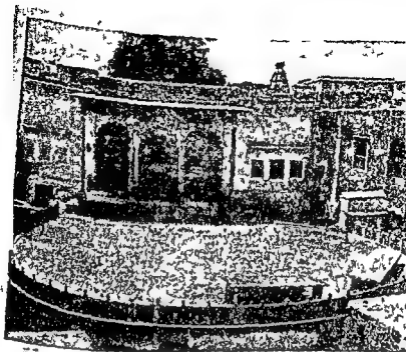


हा श्रीनैकेविहारीजी प्रकट हुए हैं, इसीसे इसका नाम निरिपन है। कोई-कोई इसको निधुवन कहते हैं, जो केवल भ्रम है।

श्रीराधारमणजीका मन्दिर—यह श्रीकृष्णचैतय महाप्रमुकी मागगीड़ीय सम्प्रदायका मन्दिर है। ये श्रीराधारमणजी श्रीगोपालभजीके पूज्य इष्टदेव हैं। सुनने हैं कि पहले ये श्रीशालग्रामरूपमें थे। कथा इस प्रकार बतायी जाती है कि श्रीगोपालभट्टजी जब श्रीचैतय महाप्रमुकी आज्ञासे श्रीवृन्दावनमें निवास करते थे तभी उन्हें श्रीचैतन्यके अन्तर्धान होनेका समाचार मिला। उसी दुःखम उन्होंने दक्षिणकी यात्रा की और श्रीगटकीजीसे द्वादश शालग्रामकी मूर्तियाँ लाये। उहाँको पधराकर वे एकत्रमें सेवा पूजा करने थे।

एक दिन किसी सेठने सभी मन्दिरोंके श्रीविप्रहोंकी सेवाके लिये रख, आभूषण बाँटे। श्रीगोपालभट्टजी श्रीगोविन्दजी, श्रीगोपीनाथजी श्रीमदनमोहनजी आदि विप्रहोंकी सेवा करनेके लिये बुलाये जाते थे। उनकी भी बलवती इच्छा हुई कि इन श्रीविप्रहोंकी भौति हमारे भी उपास्यदेवके अङ्ग प्रत्यङ्ग होते तो हम भी इन धरामूपणोंसे प्रभुका श्रृङ्गार करते। श्रीभगवान् तो भक्तगच्छास्वरूपनरु हैं। उनके लिये कोई बात असम्भव तो ह नहीं, वे तो भक्तकी सच्ची भावना देखने हैं। सच्चे भावसे जो उन्हें जीमे चाहता है वे वैसे ही बन जाते हैं। श्रीगोपालभजीकी इच्छा बलवती हो उठी। उन्हें रात्रिमें नींद नहीं आयी। वे प्रमाथु झूठे हुए भगवान्से बार-बार कह रहे थे, मुझे तो मोदि-
दर्शन दीजिये, मैं तो प्रमथी मात्रार प्रनिमाके

क म्रिये लागपिन हूँ । भक्तभयभङ्गनहारी भगवान् ने अपने शार्त
 भक्तकी प्रार्थना स्वीकार की । ध्यान करते-करते ही भग्नीको क्षरश
 आ गयी । उगी समय मानो भगवान् ने उहें जगाया और बोले—
 'गोपात्र ! उठ मेरे दर्शन कर ।' जन्दीमे हृदबडाते हुए भग्ना
 उठे आर उहोंने पाममें रक्ती हुई पिटारीको खोत्र । उममें जो
 कुछ देखा उसे दम्बर उनसी प्रसन्नताका टिकाना नहीं रहा ।
 द्वादश शालग्रामोंमेंसे ग्यारह तो ज्यों के-त्यों रक्ते हैं । एक
 शालग्राममेंसे एक बड़ी ही सुन्दर भुजमोडिनी प्रतिमा प्रकट हो
 गयी ह । वह वैशाख शुक्ल १४ की रात्रि थी अत दूसरे दिन
 पूर्णिमाको श्रीराधारमणजीके प्राक्त्रयत्र बड़ा भारी उमव मनाया
 गया जो अतर्क वैशाखी पूर्णिमाको मनाया जाता है । वे शेष
 ग्यारह शालग्राम अब भी श्रीराधारमणजीकी पूजामें विद्यमान हैं ।
 भग्नी दाक्षिणा य ब्राह्मण थ । उनसे शिष्य श्रीगोपीनाथजी देव
 बंदके गौड़ थे । उहोंने अपने माई श्रीदामोदरदासजीको सेवा
 विकार देकर उहें विवाह कर लेनेको आज्ञा दी । श्रीराधारमणजीके
 सेवामिकारी गोस्वामीगण उहीं श्रीदामोदरदामजीके वशज हैं ।
 श्रीराधारमणजीकी मूर्ति बड़ी हा मोहक है । श्रीगालग्रामशिळा
 का कुण्ड अभीतक उनकी पीठमें विद्यमान है । यहाँकी पूजा
 पद्धति बड़ी ही मधुर है । समयसे थोड़ी देरमें पहुँचनेसे भी
 दर्शन नहीं होते । श्रीवृन्दावनमें तीन हा श्रीविग्रह स्वय प्रकट
 आर प्राचीन हैं—श्रीहरिदासस्वामीके श्रीवीकेरिहारीजी, श्रीगोपाल
 भग्नाके श्रीराधारमणजी और श्रीहितहरिवशजाके श्रीराधाबल्लभ
 जी । तीनों ही मूर्तियों परम रम्य और मनोमोहक हैं । इनका



रासमण्डल (१)



गोमुलान मंदिर श्रीगणेशजी (वृंदावन)

पृ० ७७



बशीबट (वृंदावन)

पृ० ७७

प्रधान भोग मिठीकी ओटी-ओटी रबड़ीकी कुल्हियाँ हैं । श्रीराधारमणजीकी रबड़ी और मीठे पुलके मशहूर हैं । इस मन्दिरके पास रासमण्डलका चौतरा है और कई मंदिर हैं । श्रीगोपालभद्रजी भी बड़े प्रतापी महात्मा थे । उस समय भगवदिच्छसे ही ऐसे-ऐसे प्रभावशाली महात्मा प्रकट हुए थे जिन्होंने भक्तिरसका समुद्र प्रकट कर दिया था ।

इसके आगे गोपीनाथजीका मन्दिर है । यह भी श्रीकृष्ण चैतन्यसम्प्रदायका है । परन्तु प्राचीन गोपीनाथजी जयपुर पधार गये हैं । इनके सम्बन्धमें ऐसा सुना जाता है कि कोई बगाली मधु पण्डित वृन्दावनमें आये और भगवान्के दर्शनोंके लिये व्याकुल हुए । भक्तकी व्याकुलतासे व्याकुल होकर भगवान्ने बंशीबटके नीचे गोपीनाथरूपसे दर्शन दिये । भक्त प्रसन्न हो गया । उनका पहला मन्दिर राजपूतानाजिहासी श्रीरायशीलजीने बनाया था । और वर्तमान मन्दिर किसी नन्दकुमार बानूने बनाया है ।

श्रीगोकुलानन्द-मन्दिर (दूसरा नाम श्रीराधाविनोद)— श्रीलोकनाथ गोस्वामी श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभुके मंत्रास लेनेके भी पूर्व उन्हींकी अनुमतिसे वृन्दावन आये थे और उन्होंने श्रीराधाविनोद भगवान्की स्थापना की तथा जीवनपर्यन्त सेवा करते रहे । इसके आगे बंशीबट है । बंशीबटके नीचे खड़े होकर श्रीश्यामसुन्दर रशी बनाया करते थे । यहाँ श्रीठाकुरजी और ठकुरानीजीके चरणचिह्न हैं । यहाँ नित्यप्रति रास होता है ।

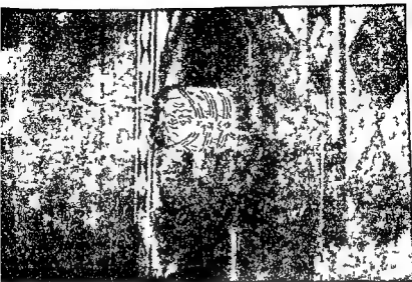
उसके आगे गोकुलनाथजी, गोसाईंजी, दामोदर रसाणीजी और महाप्रभुजीकी बैठकें हैं । नदियादके श्रीमदनमोहनजीका मन्दिर है ।

गोपश्वर महादेवजीका मन्दिर—ये महादेवजी भी भगतान् श्रावणके प्रपात्र वज्रनामके पथराये हुए हैं। इनके दर्शनके दिन घुड़ारनकी यात्रा सफ़्त रही होती। जिस समय भगतान् शरद पूर्णिमाको महारास किया था तब महादेवजीकी भी इच्छा हुई कि हम भी इस लीलाको देखें तब गोपीका रूप धरकर वहाँ पगारे। भगवान् ताड़ गय और गौत्रे—आइये गोपीधर ! उसी दिनने गोपीधर या गोपधर नामसे विख्यात होकर शिवजी यहाँ बस गय।

श्रीगिर मारास त्र्यचारीजीस मन्दिर मारासके महाराज जीवाजीका बनगया हुआ है जिसमें श्रीहंसगोपाल, मनकादक, नारदजी और श्रीराज कृष्णजीके दर्शन हैं। ये त्र्यचारीजी भी बड़ सिद्ध थे। इनको वाक्सिद्धि थी। उदरे ताम्रगभक्त थे। पदों तिले पुठ रही थे, त्रेजल बनगया प्रताप था। राजाओंने साड़ा (साला) कडकर घोटते थे। इन्होंने धीरनमें तारह वर्षतक श्रीगोपाल महामन्त्रका अनुष्ठान किया था। उन्हीसे इन्हें सिद्धि प्राप्त हुई। इनकी सिद्धिके बहुत से चमत्कार प्रसिद्ध हैं, महाराज माधवसिंह इनके ही आशीर्वादसे राजा बने। ये निम्नार्कमप्रदायके थे। इनके मन्दिरमें भी सदा रास होता है।

लालाबाबूका मन्दिर—यह भी बड़ा विलक्षण है। इसके शिखरपर चक्रसुदर्शन विराजमान है और शिखर भी बहुत शोभायमान है। लालाबाबू विरक्त बनकर जन्में रहे, त्रावासियोंके घरसे माधुकारी भिक्षा करते थे। परन्तु इन्होंने अपनी बुद्धिसे उस समयमें बहुत-से गौर और स्थान बहुत थोड़े रूपयोंमें मोल

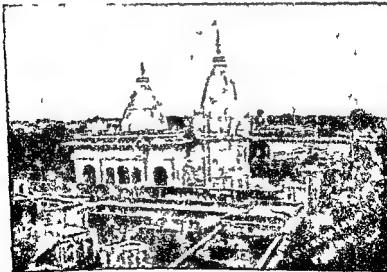
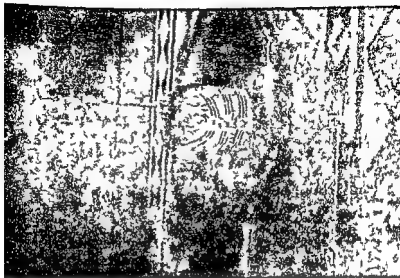
की भाँकी

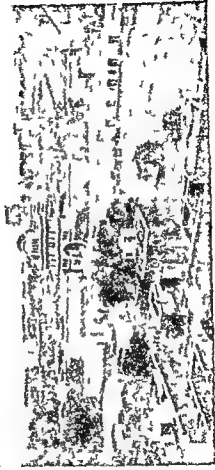


शीतलभागीदाता नगरी, तिया मन्दिर स्थापित करने महागज
 जीवनीका धरागत हुआ है तिया। श्रीहमन्त, राजवन्त
 नगरजी और श्रीरागृ गजदे वर्णन है। ये मन्त्रधारिण
 तीर्थ सिद्ध थे। इनकी वार्त्तिका पी। उदे प्रायगमक थे।
 पदे तिया कुठ मही थे केशव मजनकर प्रचारण। राजाधोमे
 साहा (साग) कदकर बोलते थे। इन्होंने धीवरों धरद धर्मक
 योगेपाल महामन्त्रक अनुशात किया गा। उगीमे इहें मिडि प्राप्त
 हुआ। इनकी मिद्विषे बहुतने चमकार प्रसिद्ध है, महाराज माधवनि
 इनके ही आशीर्वासे राजा बन। ये तिव्वार्कमप्रदायने थे। इनके
 मन्दिरमे भी महा रास होता है।

लालाबाबूका मन्दिर-यह भी बड़ा विप्रक्षण है। इसके
 शिवरपर चक्रसुदर्शन विराजमान है और शिवर भी बहुत
 शोभायमान है। लालाबाबू शिखर बनकर तबने रह, त्रावासियोंके
 घण्टे माधुफरी भिक्षा करते थे। परंतु इन्होंने अपनी बुद्धिसे
 उस समयमें बहुतसे गाँव और स्थान बहुत थोड़े रूपधोमे मोल

प्राजकी भाँकी





ले लिये कि जिनमें प्रसिद्ध व्रजके स्थान हैं । इनकी जरा-सी धरतीपर रगनाथके मन्दिरका बुर्ज बन गया था, इसपर इन्होंने मुन्दमा लड़कर उमका कुछ हिस्सा तुड़गा दिया । ये लालबाबू कलकत्ताके बगाली कायस्थ थे । व्रजरजके इतने प्रेमी थे कि उन्होंने कह दिया था कि मेरी मृत्युके बाद मेरे शवका विमान न निकाला जाय, व्रजकी गलियोंमें ग्वीचते हुए ले जाया जाय, ऐसा ही किया भी गया । इनका व्रजनिष्ठा अलौकिक थी ।

ब्रह्मकुण्ड—इसको ब्रह्महृद भी कहते हैं । भगवान्ने एक बार गोपोंको अपन ब्रह्मलोक दिखाया था । श्रीमद्भागवतमें लिखा है—

ते तु ब्रह्महृद नीता मग्ना कृष्णेन चोद्भृता ।

ददृशुर्ब्रह्मणो लोक यत्राक्रूरोऽध्यगात् पुरा ॥

(१० । २८ । १६)

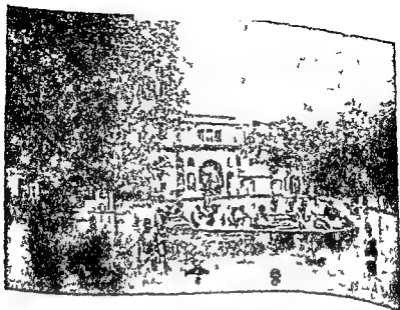
यह ब्रह्मकुण्ड इसी लीलाका घोक है ।

श्रीरङ्गनाथका मन्दिर—जिसमें बहुत ऊँचा सुरर्णका गरुड-स्तम्भ है, विशाल पुष्करिणी है, बीसियों त्रिमालियों (रहनेका स्थान) हैं । एक-एक त्रिमालीमें एक एक कुर्आ है । दक्षिणमें जैसा श्रीरङ्गजीका मन्दिर है उसीके आकार-प्रकारका यह मन्दिर है । बहुत ऊँचा शिखर है । पश्चिमका दरवाजा व्रजके दरवाजोंके आकारका-सा है, चार परकोटा है । मन्दिरमें श्रीरङ्गनाथजीकी बड़ी विशाल चतुर्भुजा मूर्ति है । चारों ओर मन्दिरोंमें अन्यान्य भगवन्मूर्तियों तथा श्री-वैष्णवसम्प्रदायके आलधारोंकी (पूजाचार्योंकी) मूर्तियाँ हैं । यह मन्दिर व्रजमें श्रीरामानुजसम्प्रदायकी कीर्तिरूप है । श्रीस्वामी

सबसे बड़ी अशक्तिपूर्ण जलना हुआ दीपक शिष्टीमें दीपता था।
 पर इसका स्पर्शक भाग धरतीने गिरा दिया। यह मन्दिर राम
 मानका बनाया हुआ है। यह मन्दिर प्राचीन कर्तोरीका एक
 अद्भुत नमूना है। मधुवा मन्दिर का परमरामे ऐसा धना है कि
 जोड़ दिगायी ही नहीं लेते। इसके ऊपर जो केन्द्रीयका
 कर्ताई है यह भी अद्भुत है। इसका पीछे दूरता नये गोविन्ददत्त-
 जीका मन्दिर है जिसमें गौदीय सम्प्रदायके कर्तोरी वैष्णव सेवा
 पूजा करते हैं।

ज्ञान-गुदड़ी मधुवाके मन्दिरके पूर्वकी ओर यमुना किनारे
 है। ज्ञान-गुदड़ी, गुदड़ी, छप्प, पैठ याबारको कहते हैं। यह
 ज्ञानकी गुदड़ी था। यहाँपर बैठकर प्राचीन महत्त्वा ज्ञान मन्त्रि-
 की श्रवण किया करते थे। अपने-अपने सिद्धांतोंका, रहस्योंका
 परस्पर आदान प्रदान किया करते थे। इसमें श्रीविष्णुस्वामि-
 सम्प्रदायके शिरोधार्य अखाड़ा (मन्दिर) है। मोहनदासजीका—
 जो कि स्वामी श्रीहरिदासजीकी शिष्यपरम्परामें थे—मन्दिर
 है, जो मोनीदासजीकी टडीके नामसे प्रसिद्ध है। यहाँकी
 अरखी (धुरियाँ) और पूरी प्रगन भोग है, यहाँकी बनी धुरियाँ
 पारस्य होकर दूर-दूरतक जाती हैं। बहुत दिनोंतक यों की-र्यों
 बनी रहती हैं। उनका भोग केवल राधाष्टमीके दिन लगता है।
 कहते हैं कि यहाँ स्वामी हरिदासजीके करुआ और कौपीन रखे
 हैं। ज्ञान-गुदड़ीमें और भी कई मन्दिर हैं। जब कभी ज्ञान-गुदड़ीमें
 यमुनाजी आ जाती ■ तब कदा पर मना जाता है। यमुनापुलिन,

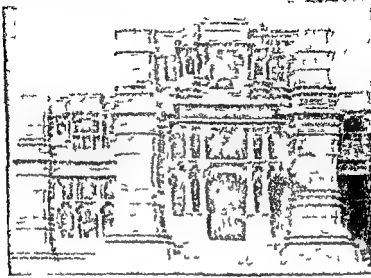
प्रजकी भाँकी



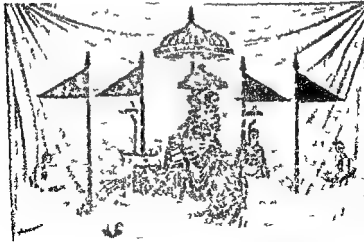
जान-गुदहा, मधुना चलाय (इन्दावन)

६०





श्रीगणेश दक्षिणीय मन्दिर (वृंदावन)



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

रत्न-गुदबीमें श्रीयमुनाजीका बड़ा रमणीक पुत्रिन (नट) है ।
 वहाँकी रज (रेती) उड़ी सुन्दर है ।

श्रीकिशोरीरमणजीका मन्दिर गहरके भीतर मयदबाजारमें
 गाहजहाँपुरवाली रानीका बनवाया हुआ है । यह विष्णुस्वामि-
 सम्प्रदायके गोस्वामी श्रीश्रीअलिजी (अमर) के वशके गोस्वामी
 शैलादिलीप्रसादजीकी भेंट है ।

जयपुरके महाराजका बनवाया हुआ बहुत सुन्दर और विशाल
 मन्दिर शहरसे बाहर ब्रह्मचारीजीको भेंट किया हुआ है । इसमें
 जयपुरकी कारीगरीका अच्छा दृश्य है और ब्रह्मचारीजीके मन्दिरके
 अतुल्यका बना हुआ है, वैसी ही यहाँ मूर्तियाँ स्थापित हैं । यह
 श्री श्रीनिम्बार्कसम्प्रदायका दर्शनीय विशाल मन्दिर है ।

तदासके राजा धनमालीरायका बनवाया हुआ मन्दिर इसके
 सामन है । राजासाहब भगवान्से जमाई गबूका मन्बन्ध रखते
 थे । इस मन्दिरमें ठाकुरजीको हुक्केका भी मोग लगाया जाता है ।

बस, प्रसिद्ध मन्दिर ये ही हैं और छोटे मन्दिर तो हजारों
 हैं, इसीमें कहने हैं कि 'वृन्दावनमें मन्दिर और मंदर हैं ।'
 किसी मकाने कहा है कि—

विंदरावनमें बँदरा बन । भजन करत है साधूजन ॥

इसमें बहुत से भजनानन्दी महात्मा ठिप हुए भजन करते
 हैं । विद्वान् भी यहाँ बहुत-से हैं । धर्मशाला, कुञ्ज, घाट बड़े
 सुन्दर बने हुए हैं और बहुत से हैं । म्युनिसिपाउटी, फोतवाली,
 सफाखाना, डाकखाना रामकृष्ण सेवाश्रम, भजनाश्रम, स्कूल,

मन्दिर और यमुना किनारे उड़ते पेड़के नीचे हनुमान्जी हैं ।
इससे आगे—

भाण्डीरवन

—है, जहाँ भाण्डीरवट है, भाण्डीरकूप है, यह बहुत पवित्र तीर्थ है । घस्तासुरको मारकर भगवान्ने इस पवित्र कूपको प्रकट किया था और इसमें स्नान किया था । यहाँ दाऊजी और श्रीकृष्णका मन्दिर है । यहाँपर ही बलदेवजीने प्रलम्बासुरको मारा था । ब्रह्मवैवर्तपुराण और गर्गसंहिताके अनुसार महाजीने श्रीराधा-कृष्णका विवाह यहाँ ही कराया है । पहले जहाँ विशाहका उल्लेख किया गया है, वहाँ केवल किन्दती, को, आर्ष प्रमाण नहीं मिल । यहाँ भगवान्के मुकुटका दर्शन है ।

माँटगॉव

जहाँ भगवान्ने दही और माकनके घोंट बखेरे तथा कोड़े हैं और फिर यशोदाजीके डरसे भागे हैं तथा उपवनमें जाकर ठिपे हैं, तब यशोदाजीने हँड़ते हँड़ते कहा है—

नीत यदि नवनीत नीत नीत स्मिमेतेन ।

आतपतापितभूमौ माधव मा धाव मा धाव ॥

यहाँपर आंगोस्वामीजीने भजन किया था । दाऊजीका मन्दिर है । यह मथुरा जिलेका तहसील है । उससे आगे—

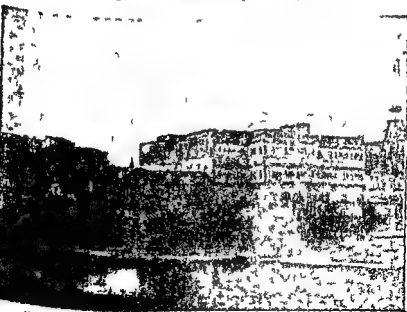
बेलवन

—है, यहाँ श्रीलक्ष्मीजीका मन्दिर है, श्रीरामानुजसम्प्रदायके पूर्वाचार्यों-



घोरनरुणपुरगानी रानीका मन्दिर (वृन्दावन)

पृ० ८३



केशीपाठ (वृन्दावन)

पृ० ८४

ब्रजकी भाँकी



चीरघाट (ब्रदावन)

पृ०



मानसरोवर

का यहाँ मगलशासन है । महाप्रभुजीकी बैठक है । बेगनसे चन्द्रान, जैसा कि आगे कह आये हैं । पुन चन्द्रावनसे—

खेलनवन

—यहाँ कि राधा-कृष्ण खेले (क्रीडा किये) हैं, उसमे जगै—

मानसरोवर

—(मानका स्थान)—यहाँ किसी समय भगवान् मान किया था, फिर गोपियोंने बहुत ही किमती करके आपकी मनाया था । यह सरोवर बहुत सुन्दर है । यहाँ राधा-कृष्णका दर्शन और दो बैठके हैं ।

राया

यहाँ नन्दरायजीका सजाना रहता था ।

लोहवन

यहाँ कृष्णकुण्ड, ओहासुरकी गुफा का गोपीनाथजीका दर्शन है । यहाँ भगवान्ने ओहासुरको मारा है, सनरादिकोंने तप किया है । यहाँ ही—

शृङ्खला

—है, जो कई कोसके बीचमें था, कर्मज महावन उसका भाग था, पर अब उस शृङ्खलाका नाम ही अश दुर्वासा-शृङ्खला पूर्व बाकी है । दुर्वासा-आश्रम के अश दुर्वासा-आश्रम हस्तगजमें है । माघमें मेला होता है । प्रतिदिन प्रातः बजे यहाँ शयनाद होता है, यानि सारी

दती ॥ आर धार्मिक लोगोंको बापामुर्तनमें जगनेकी प्रेरणा करती है । इसमें कोई जीरिका नहीं है, यथाकगच्छत् महन्तस्मी सेग-युजाका निगह कर लेते हैं । लोहवनसे कुछ दूर पूर्वकी ओर नीगगौं १, जहाँ निम्बार्जचार्य प्रजन् हुए थे । ऐसी प्रसिद्धि है । लोहवनसे आगे ऋषिगकी ओर—

आनन्दी-वन्दीदेवी

—हैं । ये दोनों दम्पिणी श्रीनन्दरायके यहाँ गोबर पपा करती थीं और इसी बहाने निव्य श्रीरूष्ण और कलदेवजीके दर्शन किया करती थीं । यहाँ न्दी आनन्दीकुण्ड है । आनन्दी-वन्दीसे आगे रीझ-गौं है । अब उसरो—

बलदेवगाँव

—फहा करने हैं । यहाँ श्रीकलदेवजी मिराजने हैं । स्वाम-मूर्ति है, बड़ी मनोहर है, इनके सामने कोनेमें रेयतीजी मिराजती हैं । वज्रमें कई स्वामीमें गोरेदाऊजी भी हैं । श्रीकलदेवजीका प्रशान भोग माउन मिथी है । यहाँ क्षीरसागर है । क्षीरसागरके पण्डा सनाढ्य हैं और वन्देवजीके पुजारी अहिवासी हैं । ये वन्देव जी बज्रनाभके पधराये हुए हैं । न जाने कैसे काल-महिमासे बहुत दिनतक ये क्षीरसागरमें शयन करते रहे । इसीसे इसका नाम क्षीरसागर है । इसमें धान, दान करनेका बहुत पुण्य है । किसी समय माऊस साहबके लेखानुसार जगन्नाथदास साधुको और वर्तमान अहिवासियोंके कपनानुमार कल्याणजी 'अहिवासीको दिया कि 'में क्षीरसागरमें शयन कर रहा हूँ, मुझे निकरल

ब्रजकी भाँकी



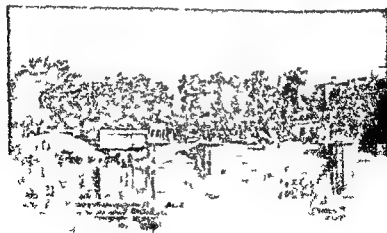
भीमलदेवनीकी भाँकी

पृ० ८८



धीरसागर

पृ० ८८



ले। तब उन्होंने निकालकर एक कच्चे मन्दिरमें विराजमान कर दिया। ऐसी किस्मती है कि श्रीक्षीरसागरसे बलदेवजी निकालकर एक कच्चे मन्दिरमें पराये गये और उनकी सेवा-रूपाका मार श्रीकन्याणजीको सुपुर्द किया गया। उन दिनों ब्रज-मण्डलमें गोकुलके गोस्वामियोंका प्राबल्य था। यह मन्दिर भी उनकी ही मालिकी में आ गया। गुसाईंजी की ओरसे कन्याणजीको कुछ मायिक मिलता था और दाऊजीके शृङ्गारके लिये। सब श्रुतुओंके क्लेश मिलते थे। तब मन्दिरकी इतनी महिमा नहीं थी। ब्रजके ही कुछ दर्शनार्थी आने थे। कन्याणजीके पास एक कम्बल था, उसीमें वे गुड़मुड़ी मारे पड़े रहते थे। श्रीबलदेवजीकी मूर्ति मनुष्यकी लंघाईसे भी कुछ बड़ी है। इतनी बड़ी विशाल मूर्ति ब्रजमण्डलमें दूसरी नहीं है। गोस्वामीजीकी ओरसे दाऊजीके लिये जाड़ोंमें रजईदार रजई मिलती थी। अपने पुजारीको कम्बल में पड़ा देखकर बलदेवजी स्वयं उठे अपनी रजई उड़ा देते थे। प्रायः काल कन्याणजी उन्हें भगवान्के बखोंमें रख देते थे।

किसीने यह बात गोस्वामी गोकुलनाथजी महाराजसे कह दी। गोस्वामीजी एक दिन रात्रिमें बारह उजे रथपर चढ़कर गोकुलसे दाऊजी आये। बलदेवजीने कन्याणजीको जगाकर कहा—कन्याण! उठ, गुसाईंजी आ रहे हैं, मेरी रजई मुझे उड़ा दे और एक कम्बल ओढ़कर सो जा। कन्याणजीने ऐसा ही किया। गुसाईंजीने निवाड़े सुलझायीं तो देखा कन्याणजी कम्बल ओढ़े पड़े हैं। गोस्वामीजीने पूछा—कन्याणराय! सच-सच बताओ क्या बात है? जो बात थी वह कन्याणजीने सच-सच—

कट दी । तब प्रसन्न होकर गुमाईजी बोले—'आजमे दाऊजी
 तुम्हारे ही हुए, तुम जैसे चाहो मेरा-भूजा करो ।' कम फिर क्या प
 धीरे धीरे बठेवजीकी महिमा बढ़न लगी । दूर-दूरसे दर्शनापी
 आने लगे । मन्दिर भी रिशाउ बन गया । औरगजेव बर सब
 मन्दिरोंको तोड़ना हुआ दाऊजीमें पहुँचा तो मन्दिरमेंमे असंख्यो भीरे
 निकलकर औरगजेवकी सेनापर दूट पड़े । इससे सम्पूर्ण सेना
 जान बचाकर भागी । औरगजेव इस आश्चर्यको देखकर चम्कि
 रह गया । तब उसने प्रसन्न होकर पाँच गौर श्रीनठदेवजीकी
 सेवाके लिये नगा दिये । वे पाँच गौर कन्याणजीके वराज
 श्रीदाऊजीके सेवाधिकारी पण्डोंपर अभीतक रिद्यमान हैं । पीछसे
 जब मथुरापर मराठाका अधिकार हुआ तो सेधियाने उन पाँच
 गौनोंको तो ज्यों-का-त्यों रखा ही, अगई गौर आर ल्याये । इस
 प्रकार साढ़ सात गौर लगे हैं । कुछ दिन अमेजी राज्यके
 आरम्भमें वे जात हुए थे । फिर महारानी रिक्टोरियाके आदेशसे
 दूट गये । सरकारी खजानेमें भी तीन रुपया रोज मिलने थे । वे
 अब बंद हो गये । दाऊजीके पण्डे श्रीवल्लभमप्रदायके हैं ।
 अब भी जब गोरुलके गोस्वामी हररूप पधारने हैं तो वे स्वयं
 श्रीदाऊजीका भोग धराते हैं । इसीसे बठेवजी व्रजमें निराज
 रहे हैं । किसीका कहना यह है कि मथुरामें श्रीकेशवनास्मीरजी
 और श्रीक्रीलरामीजीने औरगजेवको कई चमत्कार दिखलाये थे ।
 उनसे ही मुग्ध होकर फिर शेष व्रजमें वह गया ही नहीं । इससे
 पारके तीर्थ उसके अत्याचारसे बच गये । अस्तु ।

'दाऊजी तो गोरे थे, यह मूर्ति श्याम क्यों है' इसका

उत्तर कोई तो यह देने हैं कि श्याम मूर्तिमें सौन्दर्य अधिक होता है इससे श्याम मूर्ति है । कोई कहते हैं श्रीकृष्णने एक बार अपना तेज बलदेवजीमें धारिष्ट किया था । उस समयकी भावनासे दाऊबीमें श्यामता आ गयी और उस समयका निदर्शन यह श्याम मूर्ति है । श्रीमद्भागवतमें लिखा है—

‘स्वयं विश्रम्यत्यार्यं पादसवाहनादिभिः ॥’

(१०।१५।१४)

भगवान् आप ही पैर दाखकर बलदेवजीके परिश्रमको दूर करते हैं । और भी भगवान् बलदेवजीसे कहते हैं—

अहो अमी देववरामरार्चित

पादाम्बुज ते सुमनःफलार्हणम् ।

नमन्त्युपादाय शिखाभिरात्मन-

स्तमोऽपहत्यै तरुजन्म यत्कृतम् ॥

(श्रीमद्भा० १०।१५।१५)

इसमें और आगेके वर्णनमें दाऊबीमें कृष्ण, मीरे, मोर, हिरती इनकी भक्तिकी सूचना करके अन्तमें—

घन्येयमद्य धरणी तृणवीरुषन्-

त्पादस्पृशो द्रुमलता

नद्योऽद्रय स्वगमृगा सदावात्राङ्गै-

र्गोऽप्योऽन्तरेण सुखयोगी वनस्पृहा श्री

(श्रीमद्भा० १०।१५।१६)

—इससे अपनी धीर दाऊजीकी एकता करते हुए उनमें निज तेज स्थापित किया है। यही दाऊजीका मूर्तिमें श्यामनाथ कारण है। इस तेजके स्थापन होनेसे ही आगे दाऊजीने घेनुसासुर, प्रलम्बासुर आदिको मारा है। इससे पहले दाऊजीने इस प्रकारकी कोई लीला देखनेमें नहीं आयी है। श्रीबलदेवजीमें देवठ (भाद्र० शु० ६) और मार्गशीर्षमें (पूर्णिमाको) बड़े भागी मेले होते हैं। बलदेवजीसे पौंच कोस उत्तरकी तरफ दिवस्पति गोपके रहनेका—

देवनगर

—स्थान है। यहाँपर रामसागर कुण्ड और उसके पास बहुत प्राचीन बहुत बड़ा एक कदम्बका वृक्ष है और दिवस्पति गोपके पूजनेका गोवर्धन-पर्यंत भी यहाँ अबतक वर्तमान है। बलदेवजीके पास हतोदागोंच है, यहाँ धीनन्दरायकी अवाई (बैठक) है।

ब्रह्माण्डघाट

‘श्रीकृष्णने मृत्तिका खायी है’ इस बातको सुनकर यशोदाजीने जब आपको धमकाया, तब आपन मुख खोल दिया और मुखमें श्रीयशोशरानीको ब्रह्माण्ड दिखा दिया। यह कथा श्रीमद्भागवतमें ही है। श्रीशङ्कराचार्यने इसका इस प्रकार वर्णन किया है—

मृत्स्नामत्सीहेति यशोदात्ताडनशैशुसत्राम
व्यादितवक्त्रालोस्त्रिलोकालोकचतुर्दशलोकात्म् ।

(श्रीगोविन्दाष्टकात्)

उसी लीलाका निदर्शन ब्रह्माण्डघाट है। यहाँ बालकृष्ण भगवान्के दर्शन हैं। ठीक यमुना किनारे बड़ा ही सुन्दर स्थान है। पक्का घाट

है। महाकनसे पक्षी सड़क भी गयी है। यहाँ प्रसादमें मिट्टी ही मिलती है। ब्रह्माण्डघाटमें यमुना पार (मथुराकी ओर)—

कोलेघाट, कोलेगाँव

—है। एसी किन्दन्ती है कि जत्र वसुदेवजी श्रीकृष्णको लेकर महावन जाने लगे तब मार्गमें यमुनाजी मिली वसुदेवजी धैर्य धरण कर यमुनाजीमें होकर ही चले दिये। जत्र गलेतक जलमें पहुँच गये और यह जानेकी-सी सम्भाषना हुई तब बालककी चिन्तासे घबडाकर बोले कोले (इसे कोन लेंवे) इसीसे यहाँ कोले नामका घाट और कोलेगाँव बस गया। इसके अनुसार वसुदेवजी वर्तमान मथुरासे दो कोस दक्षिण कोलेघाटकी जगहसे महावन गये थे ऐसा प्रतीत होता है। यहाँसे कुछ आगे—

कर्णावलि

—है जहाँ भगवान्के कर्ण छिदे हैं।

लोचन भरि गये दौड मावनके फन छेदत देखत मुरकी।
रोवत देखि जननि अकुलानी लियो तुरत नौआरू घुरकी ॥

—रुरदास

यहाँ कर्णवेधकूप और रताचौक है। मदनमोहनजी, माधवराय-
जीके मन्दिर हैं। कुछ हटकर मथुरेशजीका प्राकृत्य स्थान है।
यह एकत्रतमें तप करनेयोग्य भूमि है। ये मथुरेशजी कोटामें
भिराजते हैं। फिर यमुना पार करके—

महावन

—है, यहाँ ही पहले नन्दजी रहा करते थे। यहाँ ही वसुदेवजी मथुरा
से श्रीकृष्णको छापे थे। यहाँ चिन्ताहरण, यमलार्जुनभङ्ग, बड्ढा

चरानका स्थान नन्दराज्य दौनन (दक्षिण) कन्नका टीला,
 नददृप, पृतनाम्बार शकनापुरमन्त्र, तृणारुचमन्त्र, तन्दमन्त्र,
 दरिमथनका स्थान मन्त्रारुचे छत्रीपालना श्रीगर्ती मन्त्रोंका
 मन्दिरे इमों दाऊजीकी मूर्ति शिवाचनी है । मथुरानाथ, द्वारकाणाथ
 और श्यामनाथके मन्दिरे गणोंका लिङ्क, गोवरुके टीले दाऊजीकी
 और वृष्णाजीकी स्मरणरेती जहाँ दोनों भाई वज्रकी कीर्तमें पुटुगन
 चले है । गोपवृष नारदटीला जहाँ नारदजीन तर किया है ।
 इनमें बहुत से स्थान नर्या है । आर महापुनमें मुसलमान बसने है,
 आधेमें हिन्दू । गङ्गागामे जाम

गोकुल

—जहाँ नन्दराजका गणोंका लिङ्क है । ठाकुरानीवाठ है,
 यहाँ महाप्रभुजीने श्रीमद्भागवतके कई पारायण किये हैं । श्रीविद्वल्-
 नाथजी, श्रीगोकुलनाथजीने भी कई पारायण किये हैं । इसीसे
 तीनोंकी बैठके है । गोकुलनाथजी तो प्राय गोकुलमें ही विराजने
 थे । आपने औरगवेव बादशाहको अनरु चमकार दिगाकर धर्मकी
 और हिन्दुओंकी रक्षा की था । (इनके ठाकुरजीका नाम श्रीगोकुल-
 नाथजी ही है ।) इसीसे गोकुलनाथजी गोकुलमें ही विराज रहे हैं,
 और मन स्वरूप उस यमनोत्पीडनके समयमें जय देशोंमें चले
 गये हैं, जो क्रमसे १ मथुरेशजी कोटाको, २ विद्वल्नाथजी
 नाथद्वाराका, ३ द्वारकाधीशजा ककरोलीको (उदयपुरनरेश
 इसी गद्दीके शिष्य हैं), ४ गोकुलनाथजी गोकुलमें ही विराज
 रहे हैं, ५ गोकुलचन्द्रमाजी धामनको (भरतपुरनरेश इसी
 गद्दीके शिष्य हैं), ६ बालवृष्णजी सरतको (गोकुलमें इनका

को मन्दिर नहीं है । इस उठी गरीके सम्बन्धमें मतमद भी है), मदनपोहनजी कामवनको । एक श्रीराजाठाकुरका मन्दिर है, इनकी जमींदारी गोकुलमें है और प्रपञ्च श्रीनाथद्वाराके अधीनमें है । इनके अतिरिक्त और भी कई मन्दिर हैं जिनकी संख्या सब मिलाकर चौबीस है । गोकुलमें रहनेसे ही बल्लभ-कुलमें गोस्वामी गोकुलिया गोमाई कहलाते हैं । गोकुलमें दो-एक विद्वान् भी अच्छे हैं । यहाँपर गुजराती सेठोंका स्थापित दो पाठशालाएँ हैं, जिनमें विद्यार्थियोंको भोजन भी मिलता है । यहाँ ही श्रीविठ्ठलनाथने छीतस्वामी मिले हैं और इनके चमत्कारको देखकर सर्वप्रथम यह पद कहा है—'भई अब गिरचर सों पहिचान' । ये छीतस्वामी शकटापके एक रत्न हैं । मथुराके चतुर्द्वी हैं । इनके वशधर मथुरामें विद्यमान हैं ।

रावल

जहाँ रावाघाट और श्रीलाडिडीजीके दर्शन हैं । यह श्रीराधाजीका ननिहाल है, यहाँ ही श्रीराधाजीका जन्म हुआ था । यहाँ सेवा-पूजा श्रीवल्लभसम्प्रदायानुसार होती है । मन्दिरकी अवस्था वर्तमान समयमें शोचनीय है । स्थान बड़ा ही रमणीक है किन्तु बेमरम्मत पड़ा है । यहाँसे यमुनाजीको पार कर मथुरा आते हैं, गोकुलसे भी मथुरा आ जाते हैं । रावलसे लोहवन, ईसगंज होकर भी मथुरा आनेका क्रम है । वस, यह व्रजभूमिका संक्षिप्त परिचय है ।



कुठ अन्य आवश्यक बातें

कुठ अन्य आवश्यक बातोंका वर्णन करके अब यह लेख समाप्त किया जाता है। कारण, व्रजमें इतने पारन स्थान हैं और उनमें से ऐसे इतिहास लगे हुए हैं जिनका सुविस्तर वर्णन करनेसे एक गृहदू ग्रन्थ नैपार हो सकता है। अनेके वृन्दावनमें ही ५००० मन्दिर बनवाये जाने हैं। व्रजमण्डलकी बड़ी मस्जिद मानी जाती है और अजरक 'तीन खेवतों मथुरा -यारी' की बात यहाँ कुछ-कुछ देखनेमें आती है।

व्रजभूमिमें मस्जिदें

यों तो व्रजमें मस्जिद तथा गिरजाका भी प्रवेश हो गया है, परन्तु फिर भी हिंदू-संस्कृतिका यहाँ साम्राज्य है। और जो मस्जिदें बनीं उनके साथमें भी अलग अलग इतिहास है, जो हिंदुओंकी उदारता या घोर उदासीनताको प्रकट करता है। उदाहरणार्थ—मथुरामें दो मस्जिदें प्राचीन, प्रसिद्ध और विशाल हैं। एक तो केशवदेवजीके मन्दिरको तोड़कर औरंगजेबद्वारा बनवायी गयी और दूसरी चौक-बाजारमें अब्दुलनबी खोकी बनवायी हुई। यह मस्जिद सन् १६६२ ईस्वीमें बनी घतलपी जाती है। और इसका इतिहास भी यह सुना जाता है कि जहाँ यह मस्जिद है वहाँ पहले कस्ती नहीं थी, कुछ कसाइयोंकी शोपद्धियों थी। अब्दुलनबी खोने, जो नयमुस्लिम फकीर थे,

मुसलमानोंको तो यह जँचा दिया कि देखो, मथुरामें तुम्हारी मसजिद बन जायगी और हिन्दुओंको यह समझाकर रानी कर डिया कि देखो, यह मसजिद बननेसे यहाँसे कसाई हट जायँगे और यह रहेगी भी मथुराके बाहर। इस प्रकार नबी खाने मसजिद बनवायी और फिर चार ब्राह्मणोंको इसमें घण्टा बजानेके लिये नियुक्त कर दिया। मसजिदके पास दूकानें भी बनवायीं जिनमेंसे आठ दूकानका किराया उन चार ब्राह्मणोंको जीविकार्थ मिलनेकी व्यवस्था कर दी। * कुछ ब्राह्मण वहाँ दुगापाठ, विष्णुसहस्रनाम तथा गोपालसहस्रनामका पाठ किया करते थे, उन्हें भी एक दूकान सौंप दी। इस प्रकार मसजिद बनकर भी इसपर अधिकार हिन्दुओंका ही रहा। एक मुल्ला भी वहाँ रहता था, पर उसे भी हिन्दू ही नियुक्त करते थे। पर इतर आकर हिन्दुओंने मूर्खतावश अपना अधिकार छोड़ दिया। अपनी दूकानें मुसलमानोंको बेच दीं, और तबसे यह मसजिद सच्ची मसजिद हो गयी। मथुरामें एक बार पेशवाकी सवारी आयी थी। उन्हें यहाँ यह मसजिद देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ, उन्होंने तुरत इसे तोड़ देनेका हुक्म दे दिया, पर हिन्दुओंने ही सुशामद कर-कराकर इसे टूटनेसे बचा लिया। अस्तु !

—*—

* इन घण्टा बजानेवाले ब्राह्मणोंमेंसे एक ब्राह्मणका चश अबतक मथुरामें विद्यमान है और घण्टापाँड़के नामसे प्रसिद्ध है।—लेखक

ब्रजभूमिमें गोवध

हिन्दुस्थानमें गोरक्षाका प्रश्न एक बड़ा रिफ्ट प्रश्न है। गोभक्त हिन्दुओंको छत्तीपर पथर रखाकर गोवध नाम सुनना तथा गोवध कार्य होना देनेके त्रिय विश्वास होना पड़ता है। यहाँ ब्रजमें भी गोवध होता है, यह कैसे परितोषका विषय है। पर गोप्रेमी हिन्दुओंको यह जानकर परम मनोय होगा कि यहाँका गोवध बंद कराना हिन्दुओंके लिये उनका कठिन नहीं है जितना अन्य स्थानोंका। कारण, यहाँ जो गोवध होता है वह सरकारी निषेधाज्ञा की अवहेलना करके होता है। भरतपुरविधेता लार्ड लैंक इस ब्रजभूमिकी परिव्रतासे बहुत अधिक प्रभावित हुए थे और उन्होंने फरमान निकालकर कभी गोवध न करनेकी आज्ञा जारी की थी। यही नहीं, उन्होंने तो इस भूमिमें शिफारतक रोकनेकी मनाही कर दी थी और अबतक भी यही मनाही चली आ रही है। मथुरा और वृन्दावनके बीचमें यत्र-तत्र उनके उस फरमानके शिलालेख गढ़े हुए हैं। बीचमें इस निषेधाज्ञाकी अवहेलना होते देखकर पुन फरमान जारी किये जा चुके हैं। दुबारा हिदायतका एक फरमान सन् १८६६ में जारी किया हुआ इधर-उधर गड़ा मिलता है। गोवध सम्बन्धी फरमानका पालन नहीं हो रहा है, इसलिये हिन्दुओंका परम कर्तव्य है कि वह चेष्टा करके गोवध बंद करानेका प्रयत्न करें। एक बार प्रयत्न किया जा चुका है, पर इस बार ऐसा सामूहिक

उद्योग करनेकी आवश्यकता है जो सफल होकर ही रहे। इस ओर हिन्दुओंको शीघ्रातिशीघ्र ध्यान देना चाहिये तथा धारा-सभा और प्रान्तीय समाजोंमें इस सम्बन्धके प्रश्न पूछे जाने चाहिये। सर्वसाधारणकी जानकारीके लिये कर्नल टेककी निष्पत्तिका सरकारी हिन्दी अनुवाद नीचे दिया जाता है—

टेक (सही अप्रेजीमें)

‘मथुराजीकी भूमि हिन्दुओंकी पवित्र पूजा भक्ति करनेकी जगह है, इस जमीनके ऊपर किसी तरहके गायोंके लिये किसी प्रकारकी तक्रुधीफ और हानि पहुँचानेकी सब लोगोंको मनायी करनेमें आती है। उन गायोंकी तरफ सब लोगोंको दया और उदारताका वर्तान करना चाहिये। उसी मथुराजीकी भूमिमें बड़ा भारी प्रसिद्ध पुरुष, बड़ी खिताबोंका पानेवाला, बड़ा शूरवीर इस जमीनपर राज्यशासन जमानेवाला, सब राजाओंके ऊपर राज्य करनेवाला, बहादुर सेनापति लार्ड टेक बहादुर साम्राममें जीतने-वाला सेनापति, जिसके हृदयमें परमेश्वरने दया और उदारताका अंश स्थापन किया है, वह इस दुःखमनामाको बाहर निकालता है कि कसाईकी जाति कोई मानस अथवा दूसरा कोई मथुरा शहरका रहनेवाला होय अथवा लशकर (पलटन) का सिपाही (गोरा) अथवा मुसाफिर होय वह कोई सदरमें, शहरमें अथवा उसके पासवाली फौजकी अखनीमें अथवा मथुरा शहरके पढ़ावोंमें गायका कत्ल नहीं करै, इस बाबदमें यह जाहिर किया जाता है कि कोई भी मानस इस जमीनमें गायोंको न काटे, यदि कोई

इस अपराधको करण तो उमरु कम्बूपर निधय की हुई मउा
 दी नायगी और वह कम्बू किमी तरह मारु नहीं किया जायगा ।
 लिखी आजकी तागीम् ३ जौलाइ १८०५ इम्वा रराउलम'ना
 मर्हानाका तारीख ५ मा १२२० हिजरी ।'

पह नची कौपी फोटोग्राफ (मही अमेजीने)

रुस्तम मेहरवान आगा,

पारमीआन आरमिम णण्ड डिगुस्तानी

ट्रांसजेटर हाइकोर्ट, बम्बई ।

~*~*~*~*~

मथुरा वृन्दावनके बीचमें शिकार खेलनेकी मनाही

स्टेशनकी आज्ञा

मार्फत करनल डब्ल्यू एच सिमोर साहेब कमेण्ड अर्थात् सरदार मथुराका ७ मार्च सन् १८६६ मथुरा आर वृन्दावन-वासी लोकमहामहिम कमेण्डर इनचीफ अर्थात् मिपहसालारका हजरमें अर्जा गुजराये हैं । इस मजमूनके लशकरी गेरा और दूसरा अधगोरालोग उस मुकामोंके नगीच मनेका हुक्म रहते भी अव्रतक शिकार खेलते हैं, इसलिये करनल सिमर साहब फरमाते हैं कि यह साफ समझना चाहिये जो कोई यह काम करेगा उसको माहेब भारी सजा देनेमें कसर नहीं करेंगे । मथुरा और वृन्दावनके बीच यमुनाका दोनों किनारा हिन्दुओंके समीप पवित्र बराबर हैं, इस कारण निश्चय निपेय हुआ कि कोई उन मुकामोंमें वा उनके बीच वा नगीच गोम्बी न चलावे । सन् १८६६ अप्रेजी २४ फरवरी ६ नरम्बरका हुकुम मुताबिक मांजा गोकुल और गिर्द उसका अंदाज डेढ़ मील नौरंगादासे और यमुनाके दोनों किनारों निपिद्ध स्थान मुनसल्ला है, उस स्थानमें लशकरीलोक शिकार नहीं खेलेगा मुताबिक हुकुम अलिन रहीमलेपडन साहेब स्टेशन स्टाफ मथुरा ।

आवश्यक सूचनाएँ —

(१) यमुनाजीका धाराप्रवाह—मथुरामें विश्रांतघाटसे जिमका माहारम्य-वर्णन ऊपर किया जा चुका है, यमुनाजी

दिन दिन दूरानिदूर पहुँचती जाती हैं । मथुरावासियों तथा श्रमी यात्रियोंका परम धर्म है कि वे उद्योग करके उन्हें घाटपर ले आये और वह सदा उस घाटपर तथा अन्य घाटोंपर, जिनपर अबतक वे हैं, बनी रहें । यदि ऐसा उद्योग न किया गया तो मथुराकी सारी शोभा नष्ट हो जायगी ।

(२) गोचरभूमि—मथुरा वृन्दावनके बीचमें गोचरभूमिके लिये स्वर्गीय बाबू हासानन्दजी वर्माने धनी-मानी उदार गोमकोंसे चन्दा करके कई हजार रुपये इकट्ठे किये थे । उनका परलोकगस्त होनेके उपरान्त एक ट्रस्ट बना । उसने मथुरा वृन्दावनके बीचमें 'धारेरा' गौरकी दो तिहाई भूमि खरीद ली है, जिसमें ब्रजकी गायें मुफ्त चरती हैं ।

—२५१५०२—

मथुरासे कुछ तीर्थस्थानोंकी दूरी तथा सवारी मील

मथुरासे	वृ-दावन	६		रेल मोटर तागा
"	गरुड़ गोविन्द	४		० " "
"	गोकुल	४		० " "
"	महानन	५	कच्चे पुलसे	० ० "
"	"	७	पक्के पुलसे	० " "
"	बलदेव	१०	कच्चे पुलसे	० ० "
"	"	१२	पक्के पुलसे	० " "
"	गोवर्धन	१३		० " "
"	रावाकुण्ड	१५		० " "
"	नन्दगौव	२३		" " "
"	बरसाना	२८		" " "
"	रावल	४		० " "
"	शान्तनुकुण्ड	४		० " "



नोट—नन्दगौव या बरसानेको रेलसे जानेवाले बोली अथवा छाता स्टेशनपर उतरें, वहाँसे तागे आदिसे जावें, सड़क बच्ची है। वैसे मथुराजीसे सीधी मोटर लारी भी प्रायः रोख जाती है।

लेखनपरिचय



धीधोदेयाचार्यो विप्र सात्त्विको शास्त्रिण् ।
 विष्णुस्यामिपदानुगमोऽस्यामी वृष्णभक्तप्रिय ॥ १ ॥
 (गच्छुः) आसीच्छ्रीमच्छ्रीलक्ष्मद्राभिधान
 पुत्रस्तम्य धीसुखानन्दनामा ।
 नम्यापि श्रीमोमहृष्णो वभूय
 सत्पुत्रोऽहं लक्ष्मण कारकोऽस्य ॥ २ ॥
 चातुर्यमस्ति गणना विदुषा समाजे
 येषे सुखे अनिरथो बहय मन्त्राय ।
 किञ्चिदशब्द हरिभक्तिलयस्तदित्य
 मयं विना सकलसम्पदनुग्रहोऽहो ॥ ३ ॥
 सत्यम् जगदेयणा हि सकला मोहोऽपि कौटुम्बिकः
 प्रप्यन्तो ममतास्पदं तु किमपि ह्ययन्न चास्त्येव न ।
 दासत्वेन हरेरद्भुतैरपि प्राणाग्नि शुद्धोऽभव
 धीमहृष्णपदारविन्दयुगलप्राप्तौ स्पृहा केवलम् ॥ ४ ॥



